साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 13-19 नवंबर 2023 वर्ष-9, अंक-31

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ:-8, मूल्य:- 2 रुपए

चुनावी साल-अफसर खाद की बोरियों पर से पीएम मोदी का फोटो हटाना ही भूल गए

खाद का संकट

जिम्मेदारों बोले-हमारी भूमिका नहीं, बोरियों पर फोटो का मामला दिल्ली के हाथ में है...

भोपाल। जागत गांव हमार

विधानसभा चुनावों के बीच मध्यप्रदेश के अफसरों की जरा सी लापरवाही ने प्रदेश के लाखों किसानों के सामने खाद का संकट खड़ा कर दिया है। डीएपी और अन्य खाद स्टॉक में होने के बाद भी इनका पर्याप्त वितरण नहीं हो पा रहा है। दरअसल, खाद की बोरियों पर पीएम मोदी का फोटो छपा है। इसके जरिये उन्होंने किसानों से जैविक खेती करने और कम से कम खाद का इस्तेमाल करने की अपील की है। यह आचार संहिता का उल्लंघन है। इस वजह से बोरियों को बांटा नहीं जा सकता। नौ अक्टूबर को आचार संहिता लागू हुई थी। लेकिन, अफसरों ने ध्यान नहीं दिया। शिकायत हुई तो निर्वाचन आयोग ने रसायन और उर्वरक मंत्रालय को बोरियों पर से मोदी का फोटो हटाने के आदेश दिए, लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में हर बोरी पर से तुरंत फोटो हटाना संभव नहीं था।

3.56 लाख मीट्रिक टन यूरिया उपलब्ध

कहीं थिनर से तो कहीं पेंट कर फोटो हटाया जा रहा है। कृषि विभाग (उर्वरक) के एक अधिकारी ने बताया कि पीएम के फोटो का मामला उर्वरक मंत्रालय दिल्ली कंट्रोल कर रहा है। इसमें राज्यों की भूमिका ही नहीं है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में करीब 3.56 लाख मीट्रिक टन यूरिया उपलब्ध है। उधर, किसानों का है कहना है कि रबी की बोवनी अक्टूबर से ही शुरू हो चुकी थी। दशहरे बाद इसमें तेजी आई।

इन जिलों खाद की किल्लत

अभी बड़वानी, शिवनी, छतरपुर, बालाघाट, मंडला, दमोह, सागर, टीकमगढ़, उज्जैन, शिवपुरी आदि जिलों में खाद की किल्लत की बात सामने आई है। दमोह में तो हालत अधिक खराब है। उज्जैन की समितियों के बाहर मारामारी मची है। देवास, धार, रतलाम, अशोकनगर आदि गेहूं उत्पादक क्षेत्र हैं। यहां भी यूरिया- एनपीके की मांग अधिक है।

स्टॉक	उपलब्धता	बिक्री	शेष
यूरिया	6.42	2.28	3.56
डीएपी	4.31	2.15	2.86
एनपीके	2.03	0.73	142
एमओपी	0.29	0.06	0.23
एसएसपी	4.06	1.11	2.95

(स्टॉक लाख मी. टन में 24 अक्टूबर की स्थिति)

डीएपी ने बनाया रिकॉर्ड

देश में सबसे अधिक यूरिया की खपत होती है। इसकी बिक्री में लगभग सात परसेंट की वृद्धि है जो कि पिछले साल के 172 लाख टन के मुकाबले इस साल 184 लाख टन में पहुंच गई है। हालांकि सबसे अधिक डाइ अमोनियम फॉस्फेट यानी कि डीएपी की बिक्री हुई है। डीएपी की बिक्री में 24 फीसद से अधिक का उछाल है। पिछले साल डीएपी 51.50 लाख टन बिका था जो कि इस साल बढ़कर 64 लाख टन पर पहुंच गया।

इनका कहना है

ये बोवनी का पीक टाइम है। हर जगह डीएपी की मांग अधिक है। एनपीके 12 32 14 भी लगता है। सोयाबीन क्षेत्र में बोवनी हो चुकी है। अब 20 नवंबर तक का समय महत्वपूर्ण है। ऐसे में एकदम से खाद की जरूरत पड़ती है। दिसंबर में यूरिया की जरूरत अधिक होगी।

-उजेके कनोजिया, कृषि वैज्ञानिक

पीएम का फोटो टाइम पर नहीं हटा। इससे खाद रोकनी पड़ी और संकट गहरा गया। कई जिलों में पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो रही है। यह तुरंत करानी चाहिए, नहीं तो प्रदेश में अन्न का संकट पैदा हो सकता है।

-कमल सिंह आंजना, अध्यक्ष, भारतीय किसान संघ

मंदसौर में बहुत परेशानी है। रोज लाइन लगानी पड़ रही है, लेकिन जरूरत भर की खाद नहीं दी जा रही है। अधिकारी चुनाव का बहाना बना रहे हैं। मजबूरी में हमें बाहर से डीएपी खरीदनी पड़ रही है। व्यापारी मनमाना पैसा ले रहे हैं।

जाट, किसान, लदुना (मंदसौर)

जिले में किसानों को डीएपी नहीं मिल रही, हमें चिंता है कि गेहूं की फसल कैसे होगी। खाद की कमी होने लगी है। समितियां डीएपी नहीं दे पा रही हैं। खाद की बोरी पर प्रधानमंत्री का फोटो है, इस वजह से स्टॉक रोक दिया गया है। चिंता है कि गेहूं की फसल कैसे होगी।

-महेश ठाकुर, किसान, धार

कृषि मंडी उज्जैन में रोज लाइन लग रही है। पिछले हफ्ते किसानों से कहा गया था कि सोमवार को खाद मिलेगी। बाद में पता चला कि रविवार को ही खाद बंट गई।

विशाल आंजना, किसान, उज्जैन

विजयाराजे कृषि विवि के वैज्ञानिकों ने गेहूं का नया बीज किया तैयार

आयरन, जिंक और प्रोटीन से भरपूर गेहूं बढ़ाएगा इम्युनिटी

ग्वालियर। जागत गांव हमार

राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं का नया बीज तैयार किया है। यह बीज भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर की मदद से तैयार किया गया है। वैज्ञानिकों की दस साल की मेहनत किसानों की आय को दो गुना करेगी, क्योंकि यह बीज बहुरोगों से लड़ने की क्षमता रखता है। साथ ही कम पानी में भी बेहतर पैदावार देता है, इसलिए कम लागत में अच्छी पैदावार देकर किसान अपनी आय बढ़ाएंगे। बीज में कार्बोहाड्रेट के साथ प्रोटीन, आयरन और जिंक की भरपूर मात्रा उपलब्ध है, जिससे व्यक्ति की इम्युनिटी सिस्टम मजबूत होगा। शरीर में खून की कमी को दूर करेगा। बीज बनकर तैयार हो चुका है। अब जल्द ही किसानों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

जिंक प्रतिरक्षा कोशिकाओं की वृद्धि के लिए जरूरी

एमडी मेडिसिन डॉ. सुशील शर्मा का कहना है कि जिंक हमारे इम्युनिटी सिस्टम के लिए काफी फायदेमंद हो सकता है। यह प्रतिरक्षा कोशिकाओं की वृद्धि और विकास के लिए जरूरी है। जिंक का पर्याप्त सेवन प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को बढ़ाने में मदद करता है और सामान्य सर्दी-जुकाम जैसी बीमारियों के जोखिम और गंभीरता को कम कर सकता है। इसी तरह से आयरन से जख्म को भरने के लिए रेड ब्लड सेल्स जल्दी बनने लगते हैं। आयरन से शरीर में आक्सीजन को सही तरह से पहुंचाने में मदद मिलती है। अगर आक्सीजन ठीक से नहीं पहुंचता तो शरीर के दूसरे अंग प्रभावित होते हैं। आयरन से बालों के झड़ने की समस्या को दूर करने में मदद मिलती है।

138 दिन में तैयार होगी फसल| कृषि वैज्ञानिक बताते हैं कि टीआरव्हीडब्ल्यू-155 गेहूं का बीज तैयार हुआ है। इस बीज को तैयार होने में करीब दस साल का वक्त लगा है। गेहूं की फसल 111 से 138 दिन में तैयार होगी, जिसकी उत्पादकता 57.50 से 59.20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह अब तक की सर्वाधिक पैदावार देने वाला बीज है, क्योंकि इससे अधिक उत्पादन देने वाला बीज अभी तक नहीं था। अन्य गेहूं के बीजों की पैदावार 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। बहुरोगी प्रतिरोधी होने के साथ गर्म वातावरण में भी कम सिंचाई में अच्छा उत्पादन देगा। टीआरव्हीडब्ल्यू-155 की वैरायटी, लोकमन-1 जीडब्ल्यू एंड एचआई -1544 का बेहतर विकल्प बनकर आई है।

गेहूं से मिलेगा 41.3 पीपीएम आयरन| टीआरव्हीडब्ल्यू-155 नामक गेहूं की वैरायटी की खासियत यह है कि इसमें कार्बोहाइड्रेट के अलावा आयरन की उपलब्धता 41.3 पीपीएम, जिंक 40.9 पीपीएम तथा गेहूं के दाने में प्रोटीन की मात्रा 11.5 पीपीएम की उपलब्धता है। गेहूं की चपाती, दलिया से व्यक्ति को आयरन, जिंक और प्रोटीन भरपूर मात्रा में मिलेगा।

स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

गेहूं को प्रोटीन, खनिज, बी-समूह के विटामिन और आहार फाइबर का एक उत्तम स्रोत माना जाता है, जो एक उत्कृष्ट स्वास्थ्य-निर्माण का कारक है। इसका उपयोग, अन्य अनाजों की तुलना में रोटी बनाने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इसके साथ-साथ गेहूं में कई औषधीय गुण होते हैं। गेहूं में विद्यमान स्टार्च व प्रोटीन मनुष्यों को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

कृषि वैज्ञानिकों ने गेहूं की नवीन वैरायटी तैयार की है। यह वैरायटी टीआरव्हीडब्ल्यू-155 को तैयार करने में भाभा एटामिक रिसर्च सेंटर की मदद की गई, जिससे इसकी उत्पादकता बढ़ गई और इसमें पौष्टिक तत्वों की मात्रा बढ़ी है। जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा और किसानों की आय को दो गुना करेगा।

डॉ. अरविंद शुक्ला, कुलपति राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि

अगले साल-2024 में भारी भारिश का अनुमान, भारत में दिखलने लगा अल नीनो का प्रभाव

इस साल सामान्य से अधिक रहेगा सर्दियों का तापमान और अच्छी बारिश के मिल रहे संकेत

भोपाल/नई। जागत गांव हमार

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग और विश्व मौसम विज्ञान संगठन की तरफ से किए गए मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस साल की आने वाली सर्दियों में तापमान सामान्य से अधिक गर्म होगा। साथ ही कहा गया है कि अल नीनो के प्रभाव से अगले साल अच्छी बारिश होगी और भरपूर मॉनसून के संकेत मिल रहे हैं। आईएमडी ने यह भी कहा कि फिलहाल अल नीनो का प्रभाव लंबे समय रहने वाला है जो आने वाले अप्रैल 2024 तक चलेगा। बताते चलें की अल नीनो एक प्राकृतिक रुप से होने वाली जलवायु घटना है जो भारत में दक्षिण-पश्चिम मांनसून के खराब होने की वजह माना जाता है। इसके प्रभाव से देश में मांनसून के दौरान बारिश अनियमित हो जाती है और कम बारिश होती है। अल नीनो के प्रभाव से जमीन और समुद्र दोनों की जगहों का तापमान बढ़ता है। वहीं आईएमडी के महानिदेशक डॉ. मृत्युंजय महापात्रा ने कहा कि इस साल जहां अल नीनो के प्रभाव से कम बारिश हुई है और मानसून सामान्य से कम रहा वही साल 2024में मानसून सामान्य रहेगा और सामान्य से ऊपर रहने की संभावना है। तो आने वाले साल में मानसून में अच्छी बारिश होगी। गौरतलब है कि इस साल देश सामान्य औसत की लगभग 94 फीसदी बारिश हुई। देश के कई राज्यों में सामान्य से कम बारिश हुई इसके कारण सूखे जैसे हालात भी उत्पन्न हुए। देशभर मे हुई इस असमान बारिश के कारण कृषि गतिविधियों पर भी असर पड़ा था।

नौ से 12 महीने तक रहता है प्रभाव

अल नीनो का संबंध मध्य और पूर्वी उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर क्षेत्र के विशेष रूप से पेरू, दक्षिण अमेरिका के पास, समुद्र की सतह के गर्म होने से है। इसके प्रभाव से समुद्र का सतह गर्म हो जाता है। हालांकि, यह देखा गया है कि इंसनों द्वारा प्रकृति के साथ की गई छेड़छाड़ के कारण उत्पन्न हुई जलवायु परिवर्तन की समस्या के कारण अल नीनों की प्रक्रिया की आवृति बढ़ गई है। अल नीनो के कारण इस वर्ष मई से सितंबर के दौरान समुद्र की सतह का तापमान 0.5एष्ट से 1.5एष्ट के बीच रहा। अल नीनो की आवृति औसतन हर दो से सात साल में होता है और आम तौर पर नौ से 12 महीने तक रहता है। यह भारत में खराब मानसून और ऑस्ट्रेलिया में सूखे जैसी स्थिति से जुड़ा है।

जनवरी तक चरम पर रहेगा प्रभाव

अल नीनों की घटना को लेकर विश्व मौसम संगठन ने एक महत्वपूर्ण जानकारी दी है। विश्व मौसम संगठन के हालिया विश्लेषण से पता चला है कि नवंबर से लेकर जनवरी 2024 तक अल नीनो की घटना के चरण पर रहने की संभावना है। इसका प्रभाव अप्रैल 2024 में कम हो जाएगा। इससे कारण भारतीय प्रायद्वीप तक अच्छी बारिश होने वाली झदक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं के पहुंचने का रास्ता साफ हो जाएगा। डब्ल्यूएमओ के अनुसार, इस मात की 90 फीसदी संभावना है कि अल नीनो आगामी उत्तरी गोलार्ध में सर्दियों और दक्षिणी गोलार्ध में गर्मियों में जारी रहेगा।

सवा लाख साल में पहली बार, 2023 रहा सबसे गर्म

» जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वॉर्मिंग का असर

» अक्टूबर महीने ने तोड़ दिया गर्मी का रिकॉर्ड

सवा लाख साल में पहली बार 2023 सबसे ज्यादा गर्म साबित हुआ है। साथ ही पिछला अक्टूबर भी दुनिया का सबसे गर्म अक्टूबर महीना था। पिछले महीने ने 2019 के अक्टूबर का भी रिकॉर्ड तोड़ दिया है। यह जानकारी यूरोपियन यूनियन के कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सीउएस) की तरफ से आई है। सीएस की डिप्टी डायरेक्टर सामंथा बर्गेस ने कहा कि पिछला रिकॉर्ड 0.4 डिग्री सेल्सियस से टूटा है। अक्टूबर महीने में जो वैश्विक स्तर पर तापमान में बदलाव आया है, वो बेहद भयावह और तेज था। यह गर्मी इसलिए बढ़ रही है क्योंकि हम इंसान ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन रोक नहीं पा रहे हैं। साथ ही पिछले साल आए अल-नीनो ने इसे और बढ़ा दिया है। अल-नीनो की वजह से पूरी दुनिया में मौसम बदला है। क्योंकि पूर्वी प्रशांत महासागर का ऊपरी हिस्सा तप रहा है। कॉपरनिकस के मुताबिक पिछले अक्टूबर महीने में पारा सामान्य से 1.7 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा है। इसकी गणना प्री-इंडस्ट्रियल काल से लेकर अब तक यानी 1850 से 1900 के बाद से अब तक। अक्टूबर महीने के गर्म साबित होने का मतलब ये है कि 2023 दुनिया के इतिहास में सबसे गर्म साल था।

2016 में अल-नीनो का असर था

साल 2016 में अल-नीनो का असर था। गर्मी तब भी थी। लेकिन इस बार रिकॉर्ड टूट गया। कॉपरनिकस के पास 1940 से लेकर अब तक के डेटा मौजूद हैं। जब इसके डेटा को आईपीसीसी के डेटा से मिलाया गया, तब सवा लाख साल का डेटा सामने आ गया। अल-नीनो की वजह से जो सबसे गर्म अक्टूबर महीना था, वो साल 2016 में था। वो रिकॉर्ड भी टूट गया। इतने लंबे समय का डेटा निकालने के लिए संयुक्त राष्ट्र के साइंस पैनल आईपीसीसी ने आइस कोर, पेड़ों के छल्ले और कोरल की मात्राओं की जांच की।

गरीब देशों के लिए आफत

तब पता चला कि अक्टूबर महीना सबसे गर्म था। इससे पहले ये रिकॉर्ड इसके पहले वाले सितंबर महीने में था। सितंबर के बाद अक्टूबर के गर्म होने से नई क्लाइमेट सिचुएशन बन गई है। जो खतरनाक है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ज्यादातर अल-नीनो वाले साल लगातार नए रिकॉर्ड्स बना रहे हैं। कोई गर्मी बढ़ाने में तो कोई बेमौसम बरसात लाने में तो कहीं बहुत ज्यादा ठंड हो रही है, तो कहीं सूखा पड़ रहा है। अल-नीनो की वजह से पूरी दुनिया का तापमान इस समय बढ़ा हुआ है। जो कई विकासशील और गरीब देशों के लिए आफत है।

सागर जिले में 10 गुना ज्यादा हो रहा मुनाफा

गोभी की खेती कर लखपति बन रहे किसान

भोपाल। मध्यप्रदेश के सागर जिले के गौरझामर इलाके के किसान सोयाबीन को छोड़कर गोभी की खेती कर रहे हैं। इसकी वजह से उन्हें 10 गुना ज्यादा तक मुनाफा हो रहा है। सागर में उगाए जाने वाला गोभी यूपी, दिल्ली, महाराष्ट्र तक सप्लाई किया जा रहा है। सबसे ज्यादा डिमांड जबलपुर और इसके बाद उत्तर प्रदेश के लखनऊ और इलाहाबाद में है। खास बात यह है कि किसानों को अपना माल बेचने के लिए मंडियों तक नहीं जाना पड़ रहा है। बल्कि व्यापारी ही किसानों के खेत तक पहुंच कर खरीदी कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश की मंडियों के व्यापारी गांव-गांव घूम-घूम कर किसानों से संपर्क कर रहे हैं और उनसे खरीदी कर रहे हैं। जिसकी वजह से किसानों का परिवहन भी बच रहा है। समय भी बच रहा है और वे अपना पूरा समय फसल की देखरेख कटाई करने में दे पा रहें हैं।

इन शहरों में हो रही सप्लाई

किसानों ने बताया कि गोभी की खेती करने के लिए महिलाएं और बच्चे भी इसमें हाथ बटा लेते हैं। इसकी वजह से अच्छी पैदावार हो रही है। मप्र में जबलपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी और बालाघाट में सप्लाई होती है। सबसे ज्यादा फूल गोभी जबलपुर जाता है, वहां से व्यापारी अन्य मंडियों में सप्लाई करते हैं। इसके बाद उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद, रायबरेली, लखनऊ और हरदोई की मंडी में नियमित सप्लाई हो रही है। एक पिकअप में 30 क्विंटल फूल गोभी जाता है। हर दिन 70-80 पिकअप और 4-5 आयशर गाड़ी यहां से लोड हो रही हैं।

30 हजार लागत, दो लाख की फसल

किसान शिवप्रसाद पटेल ने बताया कि एक एकड़ में 30 हजार रुपए की अधिकतम लागत आती है और एक एकड़ में डेढ़-दो लाख रुपए का फूल गोभी निकल आता है। किसानों ने बताया कि 2 लाख रुपए प्रति एकड़ तक मुनाफा मिल रहा है। पहले सोयाबीन की खेती करते थे जिसमें नुकसान हो रहा था। एक एकड़ में 5-6 क्विंटल सोयाबीन ही निकल रहा था जो 25-30 हजार रुपए का बिकता था।

तकनीक का कमाल:लाखों में हो रही आय

गेंदे की खेती से बदली किसान की जिंदगी

भोपाल। मध्यप्रदेश के भिंड जिले के किसान गेंहू,सरसो,जैसी फसल में ज्यादा मुनाफा न मिलने से खेती का ट्रेंड बदलना शुरू कर दिया है। यहां अब परंपरागत खेती को छोड़ फूलों की खेती पर कार्य किया जा रहा है। खास बात यह है कि इससे उन्हेंअच्छी आमदनी भी हो रही है। महीने के लाखों रुपए की बचत किसानों को खूब उत्साहित कर रहा है। भिंड जिले के मसूरी गांव के निवासी वीर सिंह का कहना है कि इससे पहले हम सरसो, गेंहू की खेती करते थे। जिसमे खाद बीज पानी आदि में लागत अधिक होने से मुनाफा कम होता था, लेकिन अब दस साल पहले हमने परंपरागत खेती छोड़ फूलों की खेती शुरू की, तो पहली साल अच्छा मुनाफा हुआ। इसके बाद हमने अन्य जमीन पर भी गेंदे के फूल की शुरुआत कर दी। आज लाखों की कमाई हो रही है। वीर सिंह के खेत में हर रोज बीस किलो फूल तोड़कर व्यापारी घर बैठे लेने आते है। अब वह गुलाब के फूल की पैदावार करने की सोच रहे हैं।

70 रुपए किलो फूल

वीर सिंह गेंदे के खेत मे हर रोज दस से बीस किलो गेंदे के फूल तोड़े जाते है, जिससे बाजार से आए व्यापारी इन्हें 70 रुपए किलो लेकर जाते हैं। इससे हिसाब हर रोज दो हजार के फूल बिक जाते है। इस बार इन्होंने लगभग तीन बीघे में दो वैरायटी का गेंदा के फूल लगाया है। जिसमें टेनिस बाल और कलकतिया वेरायटी गेंदा लहू है। यह खेती 6 महीने की होती है। जिसमे लगभग 3 लाख की कमाई होती है।

खाली जमीन पर खेती

वीर सिंह का कहना है कि अगर किसान नियमित फसल के साथ अतिरिक्त आय लेना चाहते हैं, तो वे खाली पड़ी जमीन पर गेंदे की खेती करके काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं। गेंदे के फूलों की बाजार मांग को देखते हुए किसानों के लिए इसका उत्पादन बेहद लाभकारी साबित हो सकता है। खास बात तो यह है कि इसकी खेती कम जगह पर भी आसानी से की जा सकती है। छोटे स्तर पर इसकी शुरुआत कर धीरे-धीरे मार्केट मिलने पर इसे बढ़ाया जा सकता है।

चिंता की बात: बीना अंचल में इस साल गेहूं का घटेगा रकबा

कम बारिश के कारण मसूर-सरसों की हो रही ज्यादा बोवनी

बीना। जागत गांव हमार

रबी सीजन की फसल बारिश पर निर्भर करती हैं और उसके अनुसार ही किसान बोवनी करते हैं। इस वर्ष बारिश कम होने के कारण गेहूं का रकबा कम होगा और मसूर, चना, सरसों का रकबा बढ़ेगा। रबी सीजन में करीब 55 हजार हेक्टेयर में बोवनी का लक्ष्य रखा गया है। पिछले वर्ष गेहूं की बोवनी करीब तीस हजार हेक्टेयर में हुई थी, लेकिन इस वर्ष बीस हजार हेक्टेयर में ही बोवनी होने की संभावना है। पिछले वर्षों में मसूर का रकबा कम रहा है, लेकिन इस वर्ष करीब 22 हजार हेक्टेयर में बोवनी होगी, क्योंकि पिछले वर्ष अच्छा

उत्पादन हुआ था और दाम भी अच्छे मिल रहे हैं। साथ ही यह फसल कम पानी वाली है, इसलिए किसानों का रुझान इस तरफ बढ़ा है। इसी तरह कम लागत और कम पानी में होने वाली सरसों की फसल की बोवनी भी किसान कर रहे हैं। गेहूं की बोवनी वही किसान करेंगे, जिनके पास सिंचाई के साधन हैं।

घटेगा लहसुन का रकबा

पहले दो हजार हेक्टेयर में लहसुन की बोवनी होती थी, लेकिन पिछले वर्ष से रकबा घटा है और इस वर्ष भी किसानों का रुझान कम है, क्योंकि फसल तैयार होने पर जब किसान बाजार में बिक्री करने पहुंचते हैं, तो दाम न मिलने के कारण परेशानी होती है। साथ ही ज्यादा समय तक स्टाक नहीं कर पाते हैं। जबकि बोवनी के समय महंगे दामों पर बीज खरीदते हैं और खाद, पानी, मजदूरी सहित अन्य लागत भी लगती है। सही दाम न मिलने और सुविधाएं कम होने के कारण उद्यानिकी फसलों की जगह किसान परंपरागत फसलों की ओर लौटने लगे हैं। यदि इस ओर जिम्मेदार ध्यान देते, तो किसान इस खेती को और बढ़ावा देते।

इस वर्ष मसूर का रकबा करीब 22 हजार हेक्टेयर तक पहुंचेगा। साथ ही गेहूं के रकबा में कमी आएगी। बोवनी करीब 55 हजार हेक्टेयर में होगी। **-डीएस तोमर, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी, बीना**

किसानों को मिल रहा दाम

दिवाली के पहले चमका सफेद सोना किसानों के चेहरे पर आई मुस्कान

खरगोन। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के निमाड़ और खासकर खरगोन में सफेद सोना यानी कपास का सबसे ज्यादा उत्पादन होता है। जिले में करीब सवा 2 लाख हेक्टेयर में बीटी कपास की बोवनी हुई है। इस वर्ष मौसम की मार झेलने के बावजूद दिवाली पर कृषि मंडी में कपास की बंपर आवक हो रही है। रोजाना किसान 800 से एक हजार वाहन लेकर अपनी उपज बेचने खरगोन कृषि उपज मंडी में पहुंच रहे हैं। जिले की मिट्टी से निकलने वाली इसी कपास से सूत यानी धागा बनता है, जिसका उपयोग कपड़ा बनाने में होता है। खरगोन के कपास से बनने वाला सूत देश ही नहीं, विदेशों तक पहुंचता है। कपड़ा उद्योग से जुड़े व्यापारी फैक्ट्रियों में इसी सूत से नई-नई वैरायटी के वस्त्र बनाते हैं और यही वस्त्र बाजार में बिकने आते हैं, जिन्हे आप और हम खरीदकर पहनते हैं।

खरगोन कृषि उपज मंडी में सितंबर माह में कपास की खरीदी प्रारंभ हुई थी। पिछले साल के मुकाबले इस साल सितंबर में करीब 29 फीसदी ज्यादा कपास की आवक हुई है। वहीं अक्टूबर माह में करीब 50 फीसदी से ज्यादा कपास की आवक देखी गई है। दोनों महीने का औसत प्रतिशत देखा जाएं तो करीब 44 फीसदी अधिक कपास की खरीदी इस वर्ष की गई है। अभी मंडी में कपास न्यूनतम 4205 रुपए के करीब, अधिकतम 7405 के करीब एवं मॉडल 7080 रुपए के करीब है।

2 लाख क्विंटल से ज्यादा खरीदी

मंडी सचिव लक्ष्मण सिंह ठाकुर बताते हैं कि बारिश और गर्मी से किसानों की कपास की फसलों पर प्रभाव तो पड़ा है, लेकिन, मंडी में अभी आवक पिछले साल की तुलना में ज्यादा ही देखी जा रही है। दिसंबर-जनवरी तक आवक रहेगी। उसके बाद डाउन होने की गुंजाइश है। हालांकि, मार्च तक भी खरीदी होगी। अभी तक कुल 2 लाख 4 हजार 801 क्विंटल कपास की खरीदी हुई है। जबकि 2022 में यह आंकड़ा 1 लाख 42 हजार 92 क्विंटल रहा था।

उत्पादन बढ़ने की उम्मीद

कपास के उत्पादन को और बढ़ाने इसी वर्ष कृषि विभाग ने उच्च सघन उत्पादकता प्रणाली (हाई डेंसिटी प्लांटिंग सिस्टम) का भी प्रयोग किया है। पूरे निमाड़ में केवल खरगोन जिले के 50 गांवों में इस तकनीक से पहली बार कपास की बुआई हुई है। विभाग ने प्रति एकड़ 16 से 20 क्विंटल उत्पादन होने की उम्मीद जताई है। इससे पहले महाराष्ट्र, गुजरात और चीन में ही इस तकनीक से खेती की जा रही थी।

उन्नत किस्में और उत्पादन क्षमता

किसानों के लिए फायदेमंद हो सकती है कंगनी की खेती

भोपाल। जागत गांव हमार

कंगनी मोटे अनाज में दूसरी सबसे अधिक बोई जाने वाली फसल है। यह एकवर्षीय घास है जिसका पौधा 4-7 फीट ऊंचा होता है, बीज बहुत महीन लगभग 2 मिलीमीटर के होते हैं, इनका रंग किस्म किस्म में भिन्न होता है, जिनपे पतला छिलका होता है जो आसानी से उतर जाता है। भारत में, यह मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तेलंगाना, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कुछ हद तक भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में उगाया जाता है। कंगनी से रोटियां, खीर, भात, इडली, दलिया, मिठाई बिस्किट आदि बनाए जाते हैं।

कंगनी की खेती के लिए बीज की मात्रा- पनीरी द्वारा बुवाई के लिए 800 ग्राम प्रति एकड़ और सीधी बिजाई के लिए 2.5 से 3 किग्रा प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है। इन छोटे अनाजों में पोषण के महत्व एंव मांग को देखते हुए वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया गया है।

आर्थिक महत्व

कंगनी पोषक तत्वों से भरपूर फसल है, जिसके 100 ग्राम खाने योग्य भाग में 4 ग्राम रेशा, 12.3 ग्राम प्रोटीन, 60.9 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 4.3 ग्राम वसा, 31 मि.ग्रा. कैल्शियम, 2.8 मि.ग्रा. लौहा, 290 मि.ग्रा. फॉस्फोरस, 3.3 ग्राम खनिज पदार्थ तथा 331 किलो कैलोरी खाद्य ऊर्जा पायी जाती है। कंगनी का सेवन करने से लौहा एंव कैल्शियम की आपूर्ति होती है, जोकि हमारी हड्डियों एंव मांसपेशियों के स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। कंगनी तंत्रिका तंत्र तथा ह्रदय से संबंधित रोगों को दुरुस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि इसमें ग्लूटेन की मात्रा नहीं पायी जाती। कंगनी का ग्लाइसेमिक सूचकांक निम्न होने के कारण इसका सेवन मधुमेह रोगियों के लिए काफी लाभदायक है।

जलवायु| कंगनी की खेती लगभग सभी प्रकार की जलवायु में की जा सकती है। इसकी खेती शुष्क एंव शीतोष्ण दोनों प्रकार की जलवायु में की जा सकती है। परन्तु उच्च उत्पादन एंव सर्वोत्तम वृद्धि एंव विकास के लिए शुष्क एंव अर्द्धशुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है। इसकी खेती 50-75 से. मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है। इसके सर्वोत्तम वृद्धि एंव विकास के लिए 20-30 डिग्री सेल्सियस तापमान सबसे उपयुक्त रहता है।

मृदा| कंगनी लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में उपजायी जा सकती है। इसकी खेती के लिए दोमट, बलुई दोमट तथा जलोढ़ मृदा सबसे उपयुक्त रहती है। इसकी खेती रेतीली दोमट एंव भरी मटियार दोमट भूमि में भी की जा सकती है। मृदा कंकड़ पत्थर रहित होनी चाहिए।

रबी फसलों का 31 दिसम्बर तक बीमा करा सकेंगे किसान, अधिसूचना जारी

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश के किसान 31 दिसम्बर तक करा सकेंगे रबी फसलों का बीमा, अधिसूचना जारी - मध्य प्रदेश में किसानों की फसलों को होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए कृषि विभाग ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की अधिसूचना जारी कर दी है। रबी 2023-24 की अधिसूचित फसलों के बीमा की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2023 है। अऋणी किसान अधिसूचित फसलों का बीमा बैंक, लोकसेवा केन्द्र एवं निर्धारित बीमा कंपनी के प्रतिनिधि के माध्यम से करवा सकते हैं। ऋणी किसानों का बीमा निर्धारित बैंक के माध्यम से किया जाएगा। ज्ञातव्य है कि यह योजना स्वैच्छिक है।

रबी 2023-24 की अधिसूचना के अनुसार बीमित फसलों में जिला स्तर पर मसूर, तहसील स्तर पर अलसी तथा पटवारी हल्का स्तर पर गेहूं सिंचित, गेहूं असिंचित, चना एवं राई-सरसों फसल को अधिसूचित किया गया है। कृषको को सभी अनाज, दलहन, तिलहन फसलों के लिए बीमित राशि का प्रीमियम अधिकतम 1.5 प्रतिशत देना होगा। योजना के तहत सभी बीमित अधिसूचित फसलों के लिए सभी कृषकों के लिए क्षतिपूर्ति स्तर 80 प्रतिशत होगा। किसान योजना से बाहर आने के लिए बीमांकन की अंतिम तिथि से 7 दिन पूर्व तक विकल्प चुन सकते हैं। जानकारी के मुताबिक प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन के लिए प्रदेश में जिलों के 11 क्लस्टर बनाए गए हैं। इन क्लस्टरों में 4 कम्पनियां फसल बीमा का कार्य करेंगी।

कौन कंपनी कहां करेगी बीमा

इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस कम्पनी जिले उज्जैन में, एसबीआई जनरल इंश्योरेंस कम्पनी जिले देवास, इंदौर, रायसेन, विदिशा, बैतूल, हरदा एवं होशंगाबाद में, एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कम्पनी भी। जिले में अलिराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा एवं खरगौन तथा एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कम्पनी ऑफ इंडिया 37 जिलों में मंदसौर, नीमच, रतलाम, आगर-मालवा, शाजापुर, भोपाल, सीहोर, अशोकनगर, भिंड, दतिया, गुना, मुरैना, ग्वालियर, राजगढ़, श्योपुर, शिवपुरी, अनूपपुर, बालाघाट, छिंदवाड़ा, डिंडोरी, जबलपुर, कटनी, मंडला, नरसिंहपुर, सिवनी, शहडोल, उमरिया, छइतरपुर, दमोह, निवाड़ी, पन्ना, रीवा, सागर, सतना, सीधी, सिंगरौली एवं टीकमगढ़ में कार्य करेंगी।

स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ माटी और स्वस्थ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी

सत्येन्द्र पाल सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, लहार (भिण्ड) म.प्र

स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ खेती, स्वस्थ माटी और स्वस्थ भारत आज प्राकृतिक खेती से ही संभव हो सकता है। स्वस्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत और श्रेष्ठ भारत के लिए प्राकृतिक खेती जरूरी हो गई है। प्राकृतिक खेती को भविष्य की खेती कहा जा रहा है। जिस तेजी से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है, उसको देखते हुए प्राकृतिक खेती को इसे बचाने के लिए आवश्यक माना जा रहा है।

वर्तमान में मानव स्वास्थ्य से लेकर मृदा स्वास्थ्य तक जहरीले कीटनाशकों के प्रभाव एवं रायानिक उर्वरकों के असंतुलित मात्रा में अत्यधिक प्रयोग के कारण रोग और बीमारियों का प्रकोप दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। कैंसर जैसा प्राणधातक रोग हो अथवा किडनी, लीवर, आंत आदि से जुड़ी बीमारियां, यह सब आम हो चली हैं। इसके पीछे एक प्रमुख वजह खेती-बाड़ी में कीटनाशकों के प्रयोग के साथ पैदा किये जा रहे कृषि उत्पादों के कारण निकलकर सामने आ रही है। क्योंकि कीटनाषकों के प्रयोग से पैदा किये कृषि उत्पाद का सेवन करना लोगों की मजबूरी है। इसलिए आज भारत में प्राकृतिक कृषि की बात की जा रही है।

वर्तमान में भारत के साथ पूरे विश्व में दो तरह की कृषि पद्धतियां अपनाई जा रही है जिसमें रासायनिक खेती और जैविक खेती प्रमुख है। लेकिन भारत में एक नई पहल के तहत: आज प्राकृतिक कृषि की बात भी की जा रही है। प्राकृतिक कृषि से उत्पादित खाद्यान्न, दलहन, तिलहन, सब्जी, फल आदि का सेहत के नजरिये से अत्यंत लाभदायक होने के कारण इसे बहुत ही उपयोगी माना जा रहा है। हालांकि भारत के लिए प्राकृतिक कृषि कोई नई पद्धति नहीं है हमारे देश में सदियों से किसान प्राकृतिक कृषि पर निर्भर रहे हैं और इसे करते आए हैं। लेकिन हरित क्रांति के दौर के बाद जिस प्रकार से खेती और किसानी में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा है उसके चलते धीरेगधीरे प्राकृतिक खेती विलुप्त होती चली गई। जिसे आज पुन: एक बार प्रचलन में लाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

प्राकृतिक कृषि से पैदा होने वाले कृषि उत्पादों के सेवन से होने वाले फायदों को देखेते हुये इसे भविष्य की खेती तक कहा जा रहा है। यदि आज प्राकृतिक खेती को बढावा देते हैं तो आने वाली पीढ़ियों को घातक रोग और बीमारियों से बचाया जा सकेगा। इसलिए जरूरत इस बात की है कि किसानों द्वारा इसे अपनाकर लोगों को रोग और बीमारियों से बचाने के साथ ही एक अच्छी और उपजाऊ जमीन अपनी संतति के लिए छोड़कर जाने की दिशा में कार्य करने हेतु आगे आना होगा। जिस प्रकार से विगत कुछ दशकों में खेतिहर जमीन के अंदर रासायनिक उर्वरकों और जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग बढा है। उसे देखते हुए एक तरफ जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण हुई है वहीं प्राणघातक बीमारियों के प्रकोप से कैंसर जैसी महामारी का प्रभाव आम लोगों के बीच में बढ़ा है।

आज लोगों के पास पैसा है दौलत है परंतु अच्छा भोजन जहर मुक्त खाने पीने के कृषि उत्पाद मिलना मुश्किल हो रहा है। किसान धीर धीरे प्राकृतिक कृषि की ओर उन्मुख होते हैं तो आने वाले समय में आम जनमानस को जहरमुक्त कृषि उत्पाद आसानी

से सुलभ हो सकेंगे। इससे लोगों का स्वास्थ्य बेहतर होगा और बीमारियों पर होने वाला खर्चा कम होने के साथ ही अपने प्राणों की रक्षा भी कर सकेंगे। इसलिए आज नहीं तो कल हमें प्राकृतिक खेती की ओर सोचना ही नहीं बल्कि उसकी और आगे बढ़ना ही होगा। प्राकृतिक कृषि जहां मृदा और मानव के अच्छे स्वास्थ्य की गारंटी है। वहीं प्राकृतिक कृषि के माध्यम से किसान अपनी खेती में बढने वाली लागत को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

बाजार में प्राकृतिक तरीके से पैदा किये गये कृषि उत्पादों की कीमत अधिक मिलती है। धीरेगधीरे आमजन मानस में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तो प्राकृतिक कृषि उत्पादों की मांग में भी इजाफा होगा। जब बाजार में कृषि उत्पादों की मांग बढ़ेगी तो किसानों को अपने प्राकृतिक खेती में उत्पादित उत्पादों की कीमत भी अधिक प्राप्त होगी। एक तरफ प्राकृतिक कृषि से खेती में आने वाली लागत कम होगी वहीं दूसरी तरफ अधिक कीमतों का लाभ भी किसानों को मिल सकेगा। आज प्रकृति का दोहन इस स्तर पर पहुंच चुका है कि मनुयय के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। जल, जगंल, जमीन, जलवायु, जनसंख्या आदि सभी प्रदूयाण से बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। धरती के स्वास्थ्य में इतनी विकृति आ गई है कि इसमें पैदा होने वाली वनस्पति एवं अनाज अत्यन्त जहरीले हो गये हैं। वेदों में ऋषियों ने माँ के रुप में धरती माता और गऊ माता को विषेया दर्जा प्रदान किया है, जिनके संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक मनुयय के ऊपर ही है। धरती माँ का स्वास्थ्य गौमाता के संरक्षण के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। मनुयय तभी तक जीवित रह पाएगा जब तक धरती का स्वास्थ्य बना रहेगा। प्राकृतिक कृषि इसी ओर किया गया एक सामूहिक प्रयास है जिसमें पौधों के स्वास्थ्य पर नहीं बल्कि भूमि के स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। पौधा तो स्वत: ही स्वस्थ हो जाता है। प्राकृतिक कृषि पद्धति देशी गौ आधारित है, जिसमें फसलों के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्वों की पूर्ति हो जाती है। प्राकृतिक कृषि उत्पादों को बनाने में देशी गाय का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्राकृतिक कृषि के तहत: तैयार किए जाने वाले उत्पादों में जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत आदि को तैयार करने में देशी गाय के गोबर और गोमूत्र की आश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार से नीमास्त्र, अग्नियास्त्र, ब्रह्मास्त्र, नीमपेस्ट, दशपर्णी अर्क, सप्तधान्य आदि को तैयार करने में देशी गाय का गोबर और गोमूत्र, गुड़, बेसन के अलावा घर में मिलने वाले विभिन्न प्रकार के अनाज और दानों की आवश्यकता पड़ती है। फसलों और पेड़गपौधों को विभिन्न प्रकार के रोग और बीमारियों से बचाने के लिए तैयार होने वाले उत्पादों के लिए भी विभिन्न पेड़ पौधों की पत्तियां, तंबाकू, हरी मिर्च, पुरानी खट्टी छाछ, लहसुन आदि के अलावा देषी गाय के गोमूत्र की विषेया महत्ता है। किसान अपनी जमीन के कुछ हिस्से से प्राकृतिक खेती की शुरुआत कर सकते हैं।

बीटी कपास के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गई गुलाबी सुंडी

गुलाबी सुंडी यानी पिंक बॉलवर्म के हमलों के चलते 2000 के दशक से भारतीय किसानों को अपनी कपास की फसल से लगातार नुकसान झेलना पड़ रहा है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि इस कीट ने आनुवंशिक रूप से संशोधित बीटी कपास के प्रति भी प्रतिरोध विकसित कर लिया है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईए-आरआई) में कीट विज्ञान विभाग के पूर्व प्रमुख और कीट विज्ञानी गोविंद गुजर का इस बारे में कहना है कि 1996 में अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में सफलता के बाद बीटी कपास को 2002 में भारत में पेश किया गया था।

इससे पहले, अमेरिकी बॉलवर्म (अमेरिकन सुंडी) कपास के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका था, क्योंकि इसने कीटनाशक सिंथेटिक पाइरेथ्रोइड्स, ऑर्गेनोफॉस्फोरस और कार्बामेट्स के प्रति प्रतिरोध विकसित कर लिया था। इसकी वजह से 1985 से 2002 के बीच भारत के सभी 11 कपास उत्पादक राज्यों में किसानों को भारी नुकसान भी झेलना पड़ा था।

बीटी कपास, या बोल्गार्ड को बॉलवर्म की सभी तीनों प्रजातियों (अमेरिकी, चित्तीदार और गुलाबी सुंडियों) से बचाने के लिए पेश किया गया था। इसके लिए इसमें क्राय1एसी टॉक्सिन को भी शामिल किया गया है।

उन्होंने आगे बताया कि, 2005 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने यह देखना शुरू किया कि क्या यह कीट बीटी कपास के प्रति प्रतिरोध विकसित कर रहे हैं। उसके एक साल बाद, अमेरिकी बॉलवॉर्म के खिलाफ प्रतिरोध को बढ़ाने के लिए बीटी कपास के आनुवंशिक कोड को क्राय2एबी जीन के साथ एनकोड किया गया था।

विशेषज्ञ का कहना है कि, हालांकि 2008 में हमारी टीम को पहली बार गुजरात के अमरेली में गुलाबी सुंडी के असामान्य व्यवहार का पता चला। यह कीट बीटी कपास को खाने के बाद भी जीवित था, मतलब कि इसने बीटी कपास के प्रति भी प्रतिरोध विकसित कर लिया था। उनका आगे कहना है कि, 2009-10 में हमारे वैज्ञानिक अध्ययन ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि गुलाबी सुंडी ने गुजरात के चार जिलों में क्राय1एसी जीन के खिलाफ भी प्रतिरोध विकसित कर लिया था।

सेंट्रल इंस्टीट्यूट फॉर कॉटन रिसर्च (सीआईसीआर), नागपुर के निदेशक वाईजी प्रसाद का कहना है कि 2014 में, वैज्ञानिकों ने पाया कि गुलाबी सुंडी ने क्राय2एबी जीन के प्रति भी प्रतिरोध विकसित कर लिया था।

प्रसाद के अनुसार, एक साल बाद, गुजरात ने पहली बार गुलाबी सुंडी के प्रकोप की सूचना दी, जबकि पंजाब से व्हाइटफ्लाई के प्रकोप के खबरें समाने आई थी। हालांकि उनके मुताबिक उस समय तक गुलाबी सुंडी उत्तरी क्षेत्रों तक नहीं पहुंची थी।

उन्होंने आगे बताया कि 2017-18 में, महाराष्ट्र और दक्षिणी राज्यों में बड़े पैमाने पर पिंक बॉलवर्म के संक्रमण की सूचना मिली थी। वहीं 2018-19 में, सिरसा के केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय स्टेशन से कीट के बोलार्ड के प्रति प्रतिरोधी होने की सूचना मिली थी। उसके बाद 2021-22 में, पंजाब और हरियाणा में गुलाबी सुंडी का प्रकोप दर्ज किया गया। वहीं 2023 तक बीटी कपास के प्रति प्रतिरोधी यह गुलाबी सुंडी उत्तरी राजस्थान के कुछ जिलों सहित उत्तरी क्षेत्रों में भी फैल गई।

पंजाब में मलोट के छापियांवाली गांव के किसान शीशपाल के मुताबिक उन्हें 2021 से गुलाबी सुंडी की समस्या के बारे में पता है। उनका कहना है कि, मुझे भटिंडा के मनसा में इसके फैलने के बारे जानकारी मिली थी। यह बीटी कपास के प्रति भी प्रतिरोधी हो चुका है, लेकिन वास्तव में यह अमेरिकन सुंडी से भी ज्यादा बदतर है।

उन्होंने आगे बताया कि, अमेरिकन सुंडी के विपरीत, जो फसलों को बाहर से खाती है, गुलाबी सुंडी फसलों पर बीज के अंदर से हमला करती है। उनके मुताबिक शुरुआत में इसका पता लगाना मुश्किल है और हमें नुकसान तभी दिखता है जब कटाई का समय होता है। चूंकि यह बीज को अंदर से खाता है, इसलिए कोई भी कीटनाशक इन्हें नियंत्रित करने में मदद नहीं करता। शीशपाल का कहना है कि यदि अमेरिकन सुंडी को नियंत्रित कर लें तो पैदावार के 40 फीसदी हिस्से को बचाया जा सकता है, जो लागत को कवर कर लेता है। लेकिन चूंकि गुलाबी सुंडी पूरी फसल को नुकसान पहुंचाती है, ऐसे में इसकी वजह से फसल की लागत से भी कहीं ज्यादा का नुकसान होता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जिन पौधों को इन कीटों ने खाया है उन्हें अगली बुवाई से पहले खेतों से पूरी तरह साफ करना पड़ता है। इसकी वजह से जमीन को तैयार करने में लगने वाले लागत आठ से दस हजार रुपए प्रति एकड़ बढ़ जाती है।

उनके अनुसार यह 2002 में बीटी कपास के आने के बाद से सबसे बड़ा नुकसान है। ऐसा लगता है कि हम 20 साल पीछे चले गए हैं, जब किसान अमेरिकी सुंडी से पैदावार को हुए नुकसान से जूझ रहे थे।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों के साधन का मूल स्वरूप गो माता

आज के दौर में हर कोई भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान की तरफ अग्रसर है। इस विज्ञान की दुनिया में किसी के सामने यदि धर्म चर्चा की जाए तो यह कहकर टाल दिया जाता है कि मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को विज्ञान पूरा कर रही है, फिर धर्म की दुहाई क्यों? यदि विज्ञान-भक्ति का चश्मा उतारकर शुद्ध दृष्टि से देखें तो मालूम होगा विज्ञान और धर्म का चोली-दामन का रिश्ता है। ये दोनों परस्पर सापेक्ष हैं। हिन्दू संस्कृति में जहां धर्म की प्रधानता दी गई है। वहीं विज्ञान की भी उपेक्षा नहीं की गई है।

हिन्दू संस्कृति में गो सेवा धर्म को प्रधान धर्म माना गया है। वैदिक काल से लेकर आज तक गो-गरिमा के गीत गाए जाते हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों के साधन का मूल स्वरूप गो माता ही हैं। वेद, शास्त्र, पुराण और साधु-संतों ने इन देवी की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। हिन्दू धर्म का सौभाग्य और वैभव गोमाता से ही है। हमारे राष्ट्र का जीवन गो माता पर ही अवलम्बित है। ऐसा माना जाता है गो माता सुखी तो राष्ट्र सुखी। लेकिन आज हम गो सेवा और गो सुरक्षा की बात पर विचार करना ही नहीं चाहते हैं।

वेदों में गाय के दूध को अमृत कहा गया: गाय हमारे लिए कोई पशु नहीं है बल्कि ये हमारी मां हैं। हमारी आस्था काफी ही प्रगढ़ है। साथ ही साथ ये एक आर्थिक और सामाजिक संस्था है। हमारा शाकाहार प्रधान देश अपने आहार के आवश्यक तत्वों के लिए मुख्यत: गाय के दूध पर निर्भर है। आज गो ज्ञान अपने आप में एक विषय बनता जा रहा है और आने वाले समय में जन समूह तक फिर से गाय महिमा सुनाई जायेंगीं और हमें ये समझना पड़ेगा गो हत्या या गो को संरक्षण न देना अपने राष्ट्र को गर्त में भेजने से कम साबित नहीं होगा। यतो गावस्ततो वयं अर्थात गायें हैं, इसीलिए ये बात हम सभी को ध्यान में रखना चाहिए। वेदों में गाय के दूध को अमृत कहा गया है। धर्मशास्त्र तो गोधन की महानता और पवित्रता का वर्णन करता ही है। साथ ही भारतीय अर्थशास्त्र में भी गोपालन का विशेष महत्व है।

गाय माता होते हुए भी आज हो रहीं हैं तिरस्कृत: आज गाय माता को हम मां तो मानते हैं लेकिन कहीं ना कहीं हमारी संवेदना गाय के प्रति घटती जा रही है। साथ ही कई गाय पालकों को देखा जाता है कि वो गाय के प्रति तभी अपनी सहानुभूति दिखाते हैं जब गाय दुहना होता है। उसके बाद गाय कहां है। कहां विचर रही है, क्या खा रही है, इससे कोई मतलब नहीं। सड़क-चौराहों पर देखने को मिल ही जाता है कि गाय कभी कूड़े को खाती है तो कभी पॉलिथीन में फेंकी कोई साम्रगी को निगल जाती है। जिसकी वजह से गाय के पेट में पॉलिथीन होने से उसे कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं। साथ ही पेट में पॉलिथीन जाने की वजह से पाचन क्रिया बाधित हो जाती हैं। ये दृश्य बताती है कि हम गाय माता को लेकर कितने सजग व संवेदनशील हैं। आज गाय माता को हम मां तो मानते हैं लेकिन कहीं ना कहीं हमारी संवेदना गाय के प्रति घटती जा रही है। साथ ही कई गाय पालकों को देखा जाता है कि वो गाय के प्रति तभी अपनी सहानुभूति दिखाते हैं जब गाय दुहना होता है। उसके बाद गाय कहां है। कहां विचर रही है, क्या खा रही है, इससे कोई मतलब नहीं।

दोहरा लाभ दिलाती है ईसबगोल की खेती

राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात और मध्यप्रदेश में अधिक की जाती है खेती

किसानों को अच्छी कमाई करा सकती है ईसबगोल की खेती

भोपाल। जागत गांव हमार

आज कल औषधीय खेती का चलन तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में ईसबगोल की खेती किसानों के लिए काफी लाभदायी हो सकती है। कम समय में तैयार होने वाली ईसबगोल की फसल किसानों को मालामाल कर सकती है। ईसबगोल एक औषधीय प्रजाति का पौधा है। देखने में यह पौधा झाड़ी के समान लगता है। फसल के रूप में इसमें गेहूं जैसी बालियां लगती हैं। ईसबगोल की भूसी में अपने वजन की कई गुना पानी सोख लेने की क्षमता होती है। भारत में ईसबगोल की खेती राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात और मध्यप्रदेश में अधिक की जाती है। ईसबगोल का इस्तेमाल कई प्रकार की बीमारियों को दूर करने में किया जाता है वहीं इसकी पत्तियां पशुओं के चारे के रूप में काम ली जाती हैं। इस तरह से किसानों को दोहरा लाभ होता है। पशुओं के चारे का प्रबंध भी अलग से नहीं करना पड़ता और ईसबगोल की फसल तैयार होने पर मंडी में इसके अच्छे दाम मिलते हैं।

ईसबगोल की उन्नत किस्में

गुजरात ईसबगोल 2

ईसबगोल की यह किस्म गुजरात क्षेत्र के लिए उपयुक्त और बढ़िया मानी जाती है। यह किस्म 118 से 125 दिन में पकती है। वहीं इसकी पैदावार प्रति एकड़ के हिसाब से 5 से 6 क्विंटल होती है। इसमें भूसी की मात्रा 28 से 30 प्रतिशत तक पाई जाती है।

आरआई 89 ईसबगोल

ईसबगोल की अन्य बढिया किस्म आर.आई. 89 है। यह राजस्थान के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों के लिए विकसित की गई किस्म है। इसमें फसल तैयार होने की अवधि 110 से 115 दिन होती है। इसकी उपज क्षमता 4.5 से 6.5 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म रोगों और कीटों के आक्रमण से कम प्रभावित होती है। इसके साथ ही उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

आरआई 1 ईसबगोल

ईसबगोल की आर.आई. 1 किस्म भी राजस्थान में अधिक बोई जाती है। इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 29 सेमी से 47 सेंटीमीटर होती है। यह किस्म 112 से 123 दिन में पक जाती है। वहीं उपज क्षमता 4.5 से 8.5 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

जवाहर ईसबगोल 4

ईसबगोल की यह प्रजाति मध्यप्रदेश की जलवायु के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार इसका उत्पादन 5. से 6 क्विंटल प्रति एकड़ लिया जा सकता है।

हरियाणा ईसबगोल 5

हरियाणा क्षेत्र में इस किस्म की अधिक खेती की जाती है। इसीलिए इसे हरियाणा ईसबगोल 5 किस्म के नाम से जाना जाता है। इसका उत्पादन 4 से 5 क्विंटल प्रति एकड़ लिया जा सकता है। इसके अलावा ईसबगोल की अन्य कई आधुनिक किस्में हैं इनमें निहारिका, इंदौर ईसबगोल, मंदसौर ईसबगोल आदि हैं।

ईसबगोल के लिए उपयुक्त जलवायु-मिट्टी

इसकी खेती ऊष्ण जलवायु में भी आसानी से की जा सकती है। इसके पौधों को विकास करने के लिए भूमि का पीएच मान सामान्य होना चाहिए। यदि जमीन नमी वाली हो तो इसके पौधों का सही तरीके से विकास नहीं होता। इसीलिए ईसबगोल की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है जिसमें जीवाश्म की मात्रा अधिक हो।

बोवनी का सही समय | ईसबगोल की खेती के लिए किसानों को सही समय का ज्ञान होना चाहिए। बता दें कि ईसबगोल की बोवनी अक्टूबर से नवंबर माह के बीच होनी चाहिए। इसके बीजों की बोवनी कतारों में की जाती है। इनकी कतार से कतार की दूरी 25 से 30 सेंटीमीटर होना जरूरी है। बीज को करीब 3 ग्राम थाईरम प्रति किलोग्राम के हिसाब से उपचारित कर लें और मिट्टी में मिला लें। इसके बाद ही बोवनी की जानी चाहिए।

मिट्टी को उपचारित करना जरूरी | खेत की मिट्टी को अच्छी तरह से उपचारित कर लें ताकि फसल में किसी रोग का प्रकोप नहीं हो पाए। जमीन की दो से तीन बार जुताई करें, मिट्टी का भुरभुरी बना लें, इसके बाद दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम के लिए अंतिम जुताई के समय क्यूनोलफॉस 1.5 प्रतिशत 10 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला दें।

यदि जैविक उपचार अपनाना चाहते हैं तो बुवेरिया बेसियाना एक किलो या मेटारिजियम एनिसोपली एक किलो मात्रा में एक एकड़ में 100 किलो गोबर की खाद में मिला कर खेत में बिखेर दें। मिट्टी जनित रोग से फसल को बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा विरिड की एक किलो मात्रा को एक एकड़ खेत में 100 किलो गोबर की खाद में मिला कर खेत अंतिम जुताई के साथ मिट्टी में मिला दें।

रोग के प्रकोप से फसल को बचाने के लिए बीजोपचार करते समय मेटालेक्सिल 35 प्रतिशत एसडी 5 ग्राम प्रति किलोबीज दर से उपचारित करें। अच्छी उपज के लिए ईसबगोल की बोवनी नवंबर के प्रथम उपचारित करें।

रोग और कीटों से बचाव की जानकारी

ईसबगोल की फसल में कई प्रकार के रोगों को प्रकोप होता है। यदि समय रहते इन रोग और कीटों के लिए उचित निवारण नहीं किया जाए तो फसल को काफी नुकसान पहुंचने की आशंका रहती है। ईसबगोल की फसल में रोग और कीटों का प्रकोप होने और इनके निवारण की जानकारी यहां दी जा रही है।

- ईसबगोल को तुलासिता नामक रोग से बचाने के लिए फसल की कम से कम 30 सेमी की दूरी पर बुआई करनी चाहिए।
- अगर हो सके तो कतारें पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व दिशा में निकालें। अन्य दिशाओं में कतारें निकालने से रोग का प्रकोप अधिक होता है।
- फसल के सही पकने के लिए आवश्यक है कि जमीन शुष्क रहे, पकाव के समय बारिश होने से बीज झड़ जाते हैं और छिलका फूल जाता है।
- ईसबगोल की फसल में उर्वरक की बात करें तो प्रति एकड़ 12 किलो नत्रजन और 10 किलो फास्फोरस की जरूरत होती है ताकि फसल जल्दी बढ़ कर अधिक उत्पादन दे सके।
- फसल में 60 दिन बाद बालियां निकलना शुरू होती है और करीब 115 से 130 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। फसल कटाई के दौरान मौसम साफ होना चाहिए।
- तुलासिता के अलावा ईसबगोल का दूसरा रोग है उकठा या विल्ट। इस रोग से प्रभावित पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। इस रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यूपी प्रति किलो बीज की दर से बीजों को उपचारित करना चाहिए।
- इसी तरह यदि दीमक का प्रकोप है तो इसके नियंत्रण के लिए क्लोरोपायरिफॉस 25 ईसी 2.47 लीटर पानी से सिंचाई कर जमीन में दें।

चिरौंजी की खेती

मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के जंगलों में पाए जाते हैं सर्वाधिक चिरौंजी के पौधे

भोपाल। जागत गांव हमार

चिरौंजी आमतौर पर शुष्क पर्णपाती जंगलों में पाए जाने वाला वृक्ष है। इसकी औसतम ऊंचाई 10-15 मीटर तक पाई जाती है। भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न चिरौंजी के वृक्ष उत्तरी, पश्चिमी और मध्य भारत के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती जंगलों में आमतौर पर मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में पाया जाता है। यह पेड भारत के माध्यम से, अन्य देशो जैसे बर्मा और नेपाल तक पहुच चूका है (हेमवती और प्रभांकर, 1988)। चिरौंजी को इसके उच्च मूल्य वाले कर्नेल (चिरौंजी के दाने) के लिए जाना जाता है। सूखे मेवों या सूखे फलों में बादाम की तरह ही चिरौंजी का स्थान है।

कई रोगों में फायदेमंद- इसकी पत्तियों का उपयोग त्वचा रोगों के उपचार में किया जाता है। फल का उपयोग खांसी और अस्थमा के इलाज में किया जाता है। पत्तियां से बने पाउडर घावों को ठीक करने के लिए एक सामान्य इलाज है। इसकी जड़ें तीव्र, कसैले, शीतलन, निर्णायक, कब्ज और दस्त के उपचार में उपयोगी हैं। यह ढलान पहाड़ियो पर बढ़ने के लिए एक अच्छी प्रजाति है। इसके फल में 1.20 ग्राम फल का वजन, 22प्रतिशत कुल ठोस की मात्रा, 13प्रतिशत कुल शर्करा की मात्रा,50 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम में विटामिन-सी, 0.12 ग्राम कर्नेल का वजन एवम 30प्रतिशत कर्नेल प्रोटीन की मात्रा पाई जाती है।

चिरौंजी की पौध लगाने की विधि- बीज (चिरौंजी कर्नेल) लगाने से पहले उसे उपचारित किया जाना चाहिए, जो एक कठिन शेल के अंदर बंद रहता है। बेहतर अंकुरण पाने के लिए, फलों के अंदर के बीज (कर्नेल) को सावधानी पूर्वक निकलना चाहिए। ताजी बीज बेहतर अंकुरण देता है। धूप पड़ने से बीज की व्यवहार्यता शीघ्रता से कम हो जाती है और अंकुरण कम होता है। साधारण पानी में 24-48 घंटे भींगे बीज की अंकुरण क्षमता अधिक होती है। चिरौंजी के बीज कटाई के 3 महीने बाद अपना व्यवहार्यता खो देते हैं। चिरौंजी के पौधे को 8-10 मीटर की दूरी पर लगाया जाना चाहिए। पौधे को 10×10 मीटर की दूरी पर और 8×8 मीटर की दूरी पर रहने वाले वनस्पतियों के फैलाव में लगाए जा सकते हैं।

उर्वरक प्रबंधन

पौधे लगाने से पहले गड्ढे में 20 किलोग्राम गोबर खाद, 300 ग्राम स्फुर और 200 ग्राम पोटाश डालना चाहिए। फूल आने से पहले 20-30 किलो गोबर खाद और 100 - 500 ग्राम यूरिया पौधे के बड़ने के लिए बहुत ही लाभकारी है। फूल आने के बाद 30 किलो गोबर खाद, 400 ग्राम नाइट्रोज, 400 ग्राम स्फुर और के 600 ग्राम पोटाश डालना चाहिए (तिवारी एवम अन्य, 2000)।

फल कटाई का समय

चिरौंजी के फल 4 से 5 महीनों में तैयार हो जाते हैं। इसकी फूल आने का समय फ़रवरी के पहले सप्ताह से लेकर तीसरे सप्ताह तक तथा इसकी कटाई अप्रैल-मई के महीनों में की जाती हैं। फलों के पकने के समय में इसका रंग हरे से बैंगनी रंग में बदलते हैं। फलों के पकने का समय समीपवर्ती अंत से शुरू होता है जैसे ही एक या दो ढोले रंग बदलती हैं, फसल कटाई के लिए तैयार माना जाता है। मुख्यतः इसकी कटाई मनुष्य के द्वारा किया जाता है। फलो से लदे साखांओ को एक सिकल की सहायता से काटा जाता है, जो एक लंबे बांस की लकड़ी से जुड़ा होता है। चिरौंजी गुठली के एक किलो वजन में लगभग 4000-5000 गुठली होते हैं।

गुठली से चिरौंजी दाने (कर्नेल) निकालने की विधि

कटाई से प्राप्त चिरौंजी के बीज को एक रात के लिए साधारण पानी में भिंगाया जाता है तथा हथेली व जुट कि बोरी की सहायता से अच्छे से धोकर 2-3 दिनों के लिए धुप में सुखाया जाता है। सूखे हुए गुठली से चिरौंजी दाने निकालने के लिए पारम्परिक एवम उन्नत विधि का प्रयोग किया जाता है।

जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय एक अंगीठी या स्टोव मुर्गीघर में जला दें

सर्दियों में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल

भोपाल। जागत गांव हमार

मुर्गी पालन अच्छे मुनाफे वाले व्यवसायों में से एक है। मुर्गी पालन अण्डा और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है। इनके लिए अलग-अलग प्रजातियों का चयन करना होता है। इस व्यवसाय की खासियत है कि इसे कम लागत से शुरू किया जा सकता है और इसमें कमाई जल्दी शुरू हो जाती है, क्योंकि मांस के लिए पाली जाने वाली मुर्गियां 40 से 45 दिन में तैयार हो जाती हैं। सर्दी का आगमन हो चुका है , अत: मुर्गीपालक भाईयो के लिए निम्नलिखित सुझाव बताया जा रहा है जिसे अपनाकर वे ईस मौसम मे उतम प्रबंधन कर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सकते है। जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय कुछ विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। अगर हम जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन से अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहते हैं, तो निम्नलिखित बातें ध्यान में अवश्य। रखनी चाहिए।

जाड़े के मौसम मुर्गीपालन करते समय चूजों को ठंड से बचाने के लिए गैस ब्रूडर, बांस के टोकने के ब्रूडर, चद्दर के ब्रूडर, पट्रोलियम गैस, सिगड़ी, कोयला, लकड़ी के गिट्टे, हीटर इत्यादी की तैयारी चूजे आने के पूर्व ही कर लेना चाहिए। जनवरी माह में अत्यधिक ठंड पड़ती है अत: इस माह में चूजा घर का तापमान 95 डिग्री फेरनहाईट होना अतिआवश्यीक है। फिर दूसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक 5-5 डिग्री तापमान कम करते हुए ,ब्रूडर का तापमान उतना कर देना चाहिए की चूजें ठंढ से बचे रहें और उन्हें ठंड ना लगे। सामान्यत: ब्रूडर का तापमान कम करते हुए 80 डिग्री फारेनहाइट तक कर देना चाहिए। जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय चूजों की डिलीवरी सुबह के समय कराएं, शाम या रात को बिलकुल नहीं कराएं क्योंकि शाम के समय ठंड बढ़ती चली जाती है। शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले से ही ढंक कर रखें। चूजों के आने के कम से कम 2 से 4 घंटे पहले ब्रूडर चालू किया हुआ होना चाहिए।

पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें, इससे पानी भी थोड़ा गर्म हो जायेगा। अगर ठण्ड ज्यादा हो तो ब्रूडर को कुछ समय के लिए पोलिथीन के छोटे गोल शेड से ढंक कर, हवा निरोधी भी आप बना सकते हैं। जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय मुर्गी आवास को गरम रखने के लिए हमे पहले से ही सावधान हो जाना चाहिए, क्योंकि जब तापमान 10 डिग्री सेंटीग्रेड से कम हो जाता है तब मुर्गीपालन के आवास में ओस की बूंद टपकती है इससे बचने के लिए मुर्गीपालकों को अच्छी ब्रूडिंग करना तो आवश्यंक है ही। साथ ही मुर्गी आवास के ऊपर प्लास्टिक ,बोरे, फट्टी आदी बिछा देना चाहिए एवं साइड के पर्दे मोटे बोरे और प्लास्टिक के लगाना चाहिए, ताकि वे ठंडी हवा के प्रभाव को रोक सकें। रात में जाली का लगभग 2 फीट नीचे का हिस्सा पर्दों से ढक दें। इसमें खाली बोरी और प्लास्टिक आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे अंदर का तापमान बाहर की अपेक्षा ज्यादा रहेगा। साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि मुर्गीघर में मुर्गियों की संख्या पूरी हो। जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय एक अंगीठी या स्टोव मुर्गीघर में जला दें। इस बात का ध्यान रखें की अंगीठी अंदर रखने से पहले इसका धुआं बाहर निकाल दें।

मुर्गीघर की सफाई

जाड़े के मौसम आने से पहले ही पुराना बुरादा, पुराने बोरे, पुराना आहार एवं पुराने खराब पर्दे इत्यादि बदल देना चाहिए। वर्षा का पानी यदि मुर्गीघर के आसपास इक्क्ठा हो तो ऐसे पानी को निकाल देना चाहिए और उस जगह पर ब्लीचिंग पावडर या चूना का छिड़काव कर देना चाहिए। मुर्गीघर के चारों तरफ उगी घास, झाड़, पेड़ आदि को नष्ट कर देना चाहिए। दाना गोदाम की सफाई करनी चाहिए एवं कॉपर सल्फेट युक्त चूने के घोल से पुताई कर देनी चाहिए ऐसा करने से फंगस का प्रवेश मुर्गीदाना गोदाम में रोका जा सकता है। कुंआ, दीवाल आदि की सफाई भी ब्लीचिंग पावड़र से कर लेना चाहिए।

दाने और पानी की खपत

शीतकालीन मौसम में मुर्गीदाना की खपत बढ़ जाती है। यदि मुर्गीदाना की खपत बढ़ नही रही है तो इसका मतलब है कि मुर्गियों में किसी बीमारी का प्रकोप चल रहा है। जाड़े के मौसम में मुर्गीपालन करते समय मुर्गियों के पास मुर्गीदाना हर समय उपलब्ध रहना चाहिए। शीतकालीन मौसम में पानी की खपत बहुत ही कम हो जाती है क्योंकि इस मौसम में पानी हमेशा ठंडा ही बना रहता है इसलिए मुर्गी इसे कम मात्रा में पी पाती हैं इस स्थिति से बचने के लिए मुर्गीयों को बार-बार शुद्ध और ताजा पानी देते रहना चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण कार्य

- शीतऋतु के आगमन से पहले मुर्गियों के बाड़े की मरम्मत करवायें। खिड़कियां तथा दरवाजे ठीक-ठाक हालत में होने चाहिए। यूं तो मुर्गीफार्म पर मुर्गियों के बाड़ों की बगलों पर डालियां लगी होती हैं। जहां से शाम तथा रात्रि में ठंडी बर्फीली हवाओं से बाड़े के भीतर का ताप म गिरता हैं।
- मुर्गियों से सर्वाधिक उत्पादन लेने हेतु 85 डिग्री से 95 डिग्री फॅरनहीट ताप म आवश्यक होता हैं। अर्थात् उत्तर भारत में शीतऋतु में जब वातावरण का ताप म 13 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे चला जाता हैं तब अंडा उत्पादन पर विपरीत असर पड़ सकता हैं। ऐसी स्थिति में बचाव हेतु बाड़े की बगलों पर मोटे टाट (बारदान) से बने पर्दे इस तरह लगवायें ताकि ठंडी हवाओं के झोकों से मुर्गियों को बचाया जा सके।
- पर्दों की निचली जगह पर बाँस बांध दें ताकि वे तेज हवाओं से ना उड़े और मुर्गियों को ठंडी हवाएं ना लगें।
- इसके अलावा अंडा उत्पादन बरकरार रखने के लिए तथा मुर्गियों को ठंड से बचाने के लिए बाड़े में बिजली के बल्ब (लट्टू) लगाना जरूरी हैं। यह उजाला उन्हें दिन का प्रकाश का समय मिलाकर 16 घंटों तक मिलना जरूरी हैं तभी वे दाना अच्छी तरह चुगकर अंडा देती रहती हैं। 200 वर्गफीट जगह में कृत्रिम प्रकाश प्रदान करने हेतु 400 वॉट क्षमता के बिजली के बल्ब लगाना जरूरी हैं। इसके लिए 200 वर्गफीट जगह में 100 वॉट क्षमता के चार बिजली के बल्ब लगाने से काम बन जायेगा। अंधेरे में मुर्गियां दाना नहीं चुगती हैं और इससे अंडा उत्पादन में कमी आ जाती हैं।
- शीतऋतु में मुर्गियों को ज्यादा ठंडा जल ना पिलाएं, बल्कि गुनगुना पानी देना बेहतर होगा।
- शीतऋतु में मुर्गियों की भूख बढ़ जाती है अत: उनके दोने (फीड ट्रफ) हमेशा दाने (मॅश) से भरे होने चाहिए। साधारणत: एक संकर मुर्गी को रोजाना 110 से 140 ग्राम दाना जरूरी होता हैं। पर्याप्त मात्रा में दाना ना मिलने पर अंडों की तादाद तथा वजन में गिरावट आती हैं। अत: उनके पोषण पर समुचित ध्यान दें।
- डीप लीटर पद्धति में रखी मुर्गियों के बाड़े में जो भूसा (लिटर) जमीन पर बिछा होता है वह सूखा होना चाहिए। उस पर पानी रिस जाये तो तुरन्त गीला बिछावन (लिटर) हटाकर वहां सूखा बिछावन डाल दें अन्यथा: मुर्गियों को ठंड लग सकती है।
- मुर्गियों का रोजाना निरीक्षण करें। सुस्त मुर्गियों की पशुओं के डाक्टर द्वारा जांच करवाकर दवा दें।
- मुर्गीघर में साफ-सफाई का ध्यान रखें।
- रोजाना सबेरे सूरज निकलने के बाद ही टाट (बारदान) के पर्दे ऊपर लपेटकर रखें तथा वायुवीजन होने दें।
- मुर्गीघर से मुर्गियों की चिचड़ी निरन्तर निकासी करें तथा वहाँ साफ-सफाई रखें इससे मुर्गियों का स्वास्थ्य ठीक-ठाक रहने में मदद मिलेगी।
- सर्दियों के महीने में चूज़ों की डिलीवरी सुबह के समय कराएं, शाम या रात को बिल कुल नहीं क्योंकि शाम के समय ठण्ड बढती चली जाती है।
- शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले से ही ढक कर रखें।
- चूजों के आने के कम से कम 2-4 घंटे पहले ब्रूडर आन किया हुआ होना चाहिए।
- पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें इससे पानी भी थोडा गर्म हो जायेगा।
- अगर ठण्ड ज्यादा हो तो ब्रूडर को कुछ समय के हवा निरोधी भी आप बना सकते हैं किसी भी पोलिथीन से छोटे गोल शेड को ढक कर।

जिरेनियम की उन्नत खेती

गुलाब की खेती सबसे लाभकारी

भोपाल। जागत गांव हमार

किसानों की आय दुगुनी करने के लिए जरूरी है कि परंपरागत कृषि में बदलाव। इससे एक तरफ जहां किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य साकार हो सकेगा और वहीं दूसरी तरफ फसल विविधीकरण को नई दिशा मिल सकेगी। इस परिप्रेक्ष्य में गुलाब की खुशबूयुक्त जिरेनियम की खेती किसानों के लिए अत्यन्त लाभकारी साबित हो सकती है। जिरेनियम के तेल की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए उन्नत कृषि तकनीकें विकसित की गई हैं, जो पैदावार बढ़ाने में सहायक हैं। इन कृषि तकनीकों को अपनाकर किसान उच्च गुणवत्ता वाले तेल को प्राप्त कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

जिरेनियम एक सुगंधित पौधा है, जो व्यावसायिक रूप से तेल के लिए उगाया जाता है। इसे गुलाब की खुशबूयुक्त जिरेनियम भी कहा जाता है। यह गरीबों के गुलाब के रूप में जाना जाता है। जिरेनियम का मुख्य उत्पाद इसकी पत्तियों, तने और फूलों से निकलने वाला तेल है। इसमें स्वास्थ्य लाभ के उत्कृष्ट गुण हैं और इसका उपयोग सुगंधित उपचारों में भी किया जाता है। तेल निष्कर्षण के लिए जिरेनियम की सबसे आम प्रजाति पेलागोनियम ग्रेवोलेंस है। इसकी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय मांग 600 टन से अधिक है, जो ज्यादातर चीन, मोरक्को, मिस्र और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों द्वारा परी की जाती है। 149 टन वार्षिक खपत के मुकाबले भारत में सालाना 5 टन जिरेनियम तेल का उत्पादन होता है। शेष मात्रा का बड़े पैमाने पर आयात किया जाता है, जिसमें काफी विदेशी मुद्रा खर्च होती है।

जलवायु | जिरेनियम की फसल को विविध जलवायु परिस्थितियों में उगाया जा सकता है, लेकिन यह कम आर्द्रता वाली हल्की जलवायु में अच्छा प्रदर्शन करती है। इसे 1000 से 2000 मीटर तक अलग-अलग ऊंचाई पर उगाया जा सकता है। इस फसल को 100 से 150 सें.मी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इस मात्रा से अधिक वर्षा कई कवक रोगों का कारण बनती है और फसल की पैदावार को प्रभावित करती है।

खेती के लिए उपयुक्त मिटटी | जिरेनियम की फसल बारीक, बलुई, दोमट एवं शुष्क मृदा में अच्छा प्रदर्शन करती है। खारी एवं क्षारीय मृदा इसकी खेती के लिए अयोग्य है। जैविक कार्बन समृद्ध मृदा इसकी खेती के लिए अच्छी है और यदि मृदा में कैल्शियम मौजूद है, तो यह बहुत अच्छा प्रदर्शन करती है। इसकी खेती के लिए मृदा का पी-एच मान 5.5 से 7.5 होना चाहिए।

प्रजातियां | बोरबोन/रियुनियन, अल्जीरियन/ट्यूनीस्पिन इजिप्सियन/केलकर, सिम-पवन जिरेनियम की प्रमुख किस्में हैं।

भूमि की तैयारी | अच्छी तरह से पौधों की स्थापना जिरेनियम की फसल में प्राथमिक आवश्यकता है, क्योंकि यह लंबी अवधि की फसल है। इसकी खेती के लिए सभी प्रकार के खरपतवारों को हटाने के बाद मृदा को बारीक अवस्था में रखना चाहिए। खेत से अतिरिक्त पानी निकालने के लिए भूमि में हल्की ढलान होनी चाहिए।

पौध तैयार करना | साधारणत भारत में जिरेनियम के बीज नहीं बनते हैं, इसलिए इसकी पौध तैयार करने के लिए कलमों का प्रयोग किया जाता है। भूमि का चुनाव करते समय ध्यान दें कि पौधशाला में सूर्य के प्रकाश की समुचित व्यवस्था हो तथा मृदा बलुई दोमट होनी चाहिए।

दीमक से बचाव | फ्यूराडान या फोरेट 20 कि.ग्रा./हैक्टर धूल या रेत में मिलाकर पौध रोपण से पूर्व मृदा में प्रयोग किया जाना चाहिए। खड़ी फसल में क्लोरोपायरीफॉस 800 मिली/हैक्टर की दर से भूमि नमी की अवस्था में छिड़काव कर देना चाहिए।

जैविक नियंत्रण | इन कीटों से फसल को बचाने के लिए नीम की खली, केंचुए की खाद, अथवा एप्रीकोट इत्यादि का प्रयोग करने से मृदाजनित रोगों से बचाव किया जा सकता है। अमलतास के छिलकों का गूदा भी सूत्र कृमिजनित रोगों के नियंत्रण में प्रभावी होता है।

पत्तियों की कटाई | सामान्यत अच्छी देखरेख किये जाने पर जिरेनियम की पत्तियों की पहली कटाई रोपण के 3-4 माह बाद कर सकते हैं। इनकी कटाई उनके पूर्ण विकसित होने पर की जानी चाहिए। पत्तियां अधिक रसीली या अधिक पीली नहीं होनी चाहिए।

उत्पादन | पत्तियों में जिरेनियम तेल की मात्रा कई । बातों पर निर्भर करती है जैसे-जलवायु, समुद्रतल । से ऊंचाई, परिवहन के तरीके, प्रजाति, पौधों । की आयु, आसवन के तरीके,खेती की देख रेखआदि। समुद्रतल से 1000-1800 मीटर ऊंचाई होने पर इससे 0.12-0.20 प्रतिशत तक तेल । प्राप्त किया जा सकता है। प्रति हैक्टर पत्तियों । की मात्रा 250 से 300 क्विंटल, तेल 0.1 ई प्रतिशत के आधार पर 25 से 30 किग्रा/हैक्टर । प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकता है।

शोध में खुलासा: नियंत्रित रहता है शरीर का तापमान

जीरा-गुड़ खाने से दुधारू भैंसों के सेहत पर नहीं पड़ता है मौसम का प्रभाव

भोपाल। जागत गांव हमार

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जलवायु परिवर्तन आधुनिक पशुधन उत्पादन प्रणाली के साथ-साथ मनुष्यों के लिए भी खाद्य सुरक्षा के लिए प्रमुख पर्यावरणीय चिंता है। 20वीं पशुधन जनगणना 2019 के अनुसार, भारत में भैंसों की कुल आबादी (109.85 मिलियन) थी, जो 19वीं पशुधन जनगणना 2012 की जनसंख्या से 1.0 प्रतिशत अधिक है। 20वीं सदी की शुरुआत के बाद से ग्लोबल वार्मिंग के कारण सतह के तापमान में लगभग 0.7 डि.सें की वृद्धि हुई है। यदि पशुधन खेती के लिए प्रबंधन संरचना नहीं बदली गई तो महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होने की संभावना है। इसलिए गर्मी के तनाव से निपटने के लिए नियंत्रण उपायों की स्थापना जैसे-शीतलन सुविधाएं, विशिष्ट पोषण और देखभाल, प्रभावी जल प्रणाली, विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सिडेंट और प्रोबायोटिक्स के साथ पूरकता आवश्यक है।

इसी के मद्देनजर, गर्मी के मौसम के दौरान कई शोधकर्ताओं के शोध निष्कर्षों ने कम उत्पादन प्रदर्शन और शुष्क पदार्थ के सेवन का संकेत दिया, ताकि उत्पादन प्रदर्शन को बनाए रखा जा सके और आवश्यक शुष्क पदार्थ की पूर्ति की जा सके। सोनीपत (हरियाणा) जिले के फार्मर्स फर्स्ट प्रोजेक्ट कथूरा (खेलगांव) के तहत अनुकूलित गांव से चौबीस दूध देने वाली मुर्रा भैंसों (1-3 समता) का चयन किया गया।

जीरा और शीरा खिलाने से मिला परिणाम | प्रयोग गर्मी के मौसम (अप्रैल से सितंबर) के दौरान आयोजित किया गया था और तापमान आर्द्रता सूचकांक गणना के लिए पर्यावरणीय मापदंडों (सूखा बल्ब तापमान और गीला बल्ब तापमान) दर्ज किया गया था। दूध की पैदावार और शुष्क पदार्थ का सेवन पाक्षिक अंतराल पर दर्ज किया गया और जीरा और शीरा के पूरक दूध देने वाली भैंसों में उच्च मूल्य पाया गया। शारीरिक मापदंडों को मासिक अंतराल पर दर्ज किया गया और जैव रासायनिक विश्लेषण के लिए रक्त के नमूने भी मासिक अंतराल पर एकत्र किए गए। शारीरिक प्रतिक्रियाएं जैसे, गर्मी के मौसम में दूध पिलाने वाली भैंसों की श्वसन दर, मलाशय का तापमान और त्वचा का तापमान जीरा और गुड़ से पूरक भैंसों में अन्य की तुलना में काफी कम पाया गया। मौसम के दौरान अन्य भैंसों की तुलना में जीरा और गुड़ से पूरक स्तनपान कराने वाली भैंसों में एंटीऑक्सीडेंट एंजाइम और हीट शॉक प्रोटीन स्तर जैसे जैव रासायनिक पैरामीटर काफी कम पाए गए।

ऊर्जा प्रदान करने की क्षमता

विभिन्न कैटोबोलिक प्रतिक्रियाओं के दौरान उत्पन्न होने वाले मुक्त कणों को बेअसर करने के लिए गर्मी के तनाव के दौरान इन एंटीऑक्सीडेंट एंजाइमों का स्तर बढ़ जाता है। कोशिका अखंडता की रक्षा या रखरखाव के लिए हीट स्ट्रेस के दौरान हीट शॉक प्रोटीन की अभिव्यक्ति अधिक होती है। जीरा और शीरा के पूरक के बाद हमने बेहतर स्वास्थ्य स्थिति, उत्पादन प्रदर्शन और शुष्क पदार्थ के सेवन के रूप में लाभकारी प्रभाव देखा। क्योंकि इन पूरकों में खराब गुणवत्ता वाले मोटे चारे की पाचनशक्ति में सुधार करने और खराब मौसम की स्थिति के कारण हरे चारे की अनुपलब्धता के कारण कम पोषित भैंसों को ऊर्जा प्रदान करने की क्षमता होती है।

प्रयोग से सामने आया तथ्य

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जीरे का पूरक और शीरा ने गर्मी के तनाव के दौरान दुधारू भैंसों के स्वास्थ्य की स्थिति और उत्पादक प्रदर्शन को बनाए रखने में सुधार किया।

दुधारू पशुओं को बिनौला अधिक मात्रा में खिलाना चाहिए

ठंड में पशुओं को दें संतुलित आहार, कम नहीं होगा दूध

भोपाल। जागत गांव हमार

ठंड के मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। ताकि पशुओं के दुग्ध उत्पादन पर बदलते मौसम का असर न पड़े। सर्दी के मौसम में यदि पशुओं के रहन-सहन और आहार का ठीक प्रकार से प्रबंध नहीं किया गया, तो ऐसे मौसम का पशु के स्वास्थ्य व दुग्ध उत्पादन की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय मौसम में होने वाले परिवर्तन से पशुओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है, परंतु ठंड के मौसम में पशुओं की दूध देने की क्षमता शिखर पर होती है तथा दूध की मांग भी बढ़ जाती है। अत: इस प्रभाव से बचने के लिए पशुपालकों को मुख्यत: निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

ठंड के मौसम में पशुओं को संतुलित आहार दें। जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज तत्व, पानी, विटामिन व वसा आदि पोषक तत्व मौजूद हो। इन दिनों में पशुओं को विशेष देखभाल की जरुरत होती है, ऐसे में पशुओं के खान-पान व दूध निकालने का समय एक ही रखना चाहिए। खान पान में सावधानी बरतें, दुधारू पशुओं को बिनौला अधिक मात्रा में खिलाना चाहिए। बिनौला दूध के अंदर चिकनाई की मात्रा बढ़ाता है। बाजरा किसी भी संतुलित आहार/बाखर में 20 प्रतिशत से अधिक नहीं मिलाना चाहिए। शीत लहर के दिनों में पशु की खोर के उपर या नांद में सैंधा नमक का ढेला रखें ताकि पशु जरूरत के अनुसार उसका चाटता रहे। ठंड के दिनों में पशुओं के दाना बाटा में 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण व 1% नमक जरुर मिलाकर दे।

सर्दी में पशुओं को हरा चारा जैसे बरसीम पशुओं को दे, परन्तु ध्यान यह दे की सिर्फ हरा चारा खिलाने से अफारा व अपचन भी आ जाती है, ऐसे में हरे चारे के साथ सूखा चारा मिलाकर खिलाए। 4 किलो बरसीम 1 किलो तक दाना बाटा की बचत कराता है। 10 लीटर दुधारू पशु के लिए 20-25 किलो हरा चारा (दलहन) 5-10 किलो सूखा चारा के साथ मिला कर दे।

विभिन्न तरह की खली इस क्रम में उपलब्ध कराये, सरसों का खल, कपास खल, मूंगफली का खल, सोयाबीन खली दाना बाटा दुग्ध उत्पादन के अनुसार दे। 2-2.5 लीटर दूध उत्पादन पे 1 किलो बाटा पशुओं को जीवन निर्वाह के अलावा उपलब्ध कराए। पशु को सप्ताह में दो बार गुड़ जरूर खिलाएं। गुनगुना व ताजा व स्वच्छ पानी भरपूर मात्रा में पिलाएं, क्योंकि पानी से ही दूध बनता है और सारी शारीरिक प्रक्रियाओं में पानी का अहम योगदान रहता है।

ठंड से होने वाले पशुओं में रोगों का रोकथाम

पशुओं में आफरा | ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय पशुओं को जरूरत से ज्यादा दलहनी हरा चारा जैसे बरसीम व अधिक मात्रा में अन्न व आटा, बचा हुआ बासी भोजन खिलाने के कारण यह रोग होता है। इसमें जानवर के पेट में गैस बन जाती है। बायीं तरफ पेट फूल जाती है।

पशुओं में निमोनिया | दूषित वातावरण व बंद कमरे में पशुओं को रखने के कारण तथा सं मण से यह रोग होता है। रोग ग्रसित पशुओं की आंख व नाक से पानी गिरने लगता है। ठण्ड के दिनों में पशु निमोनिया के शिकार हो जाते है, खास कर बछड़े या बछड़ी इसलिए जरूरी है की पशुओं को इससे बचाया जाए।

निमोनिया होने पर बुखार भी हो जाता है जिससे पशु खाना एवं जुगाली करना छोड़ देता है अथवा उसकी उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। निमोनिया की शिकायत होने पर तुरंत नजदीकी पशुचिकित्सक को संपर्क करे।

पशुओं को जुकाम | इससे प्रभावित पशु को नाक व आंख से पानी आना, भूख कम लगना, शरीर के रोंएं खड़े हो जाना आदि लक्षण आते हैं। उपचार के लिए एक बाल्टी खौलते पानी के ऊपर सूखी घास रख दें। रोगी पशु के चेहरे को बोरे या मोटे चादर से ऐसे ढ़के कि नाक व मुंह खुला रहे। फिर खौतले पानी भरे बाल्टी पर रखी घास पर तारपीन का तेल बूंद-बूंद कर गिराएं। भाप लगने से पशु को आराम मिलेगा। इसके अलावा ठंड में पशुओं को बीमारियों से बचाने के लिए पशुपालन विभाग की ओर से चलाए जाने वाले विशेष टीकाकरण अभियानों में टीके लगवाने चाहिए। जिससे पशु ठंड के मौसम में निरोग रह सके। पशुओं को जूट के बोरे को ऐसे पहनाएं जिससे वे खिसके नहीं। सर्दी में वातावरण में नमी के कारण पशुओं में खुरपका, मुंहपका तथा गलाघोटू जैसी बीमारियों से बचाव के लिए समय पर टीकाकरण करें। साथ ही पशुओं को कृमिनाशक दवाई और बाह्य परजीवी मुक्त कराए।

पशु आवास प्रबंधन

ठंड के मौसम में पशुपालन करते समय ,पशुओं के आवास प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें। सर्दी के मौसम में अंदर व बाहर के तापमान में अच्छा खासा अंतर होता है। पशु के शरीर का सामान्य तापमान विशेष तौर से गाय व भैंस का क्रमशः 101.5 डिग्री फारेनहाइट व 98.3-103 डिग्री फारेनहाइट (सर्दी-गर्मी) रहता है और इसक विपरीत पशुघर के बाहर का तापमान कभी-कभी शून्य तक चला जाता है यानि पाला तक जम जाता है। अतः इस ठंड से पशु को बचाने के लिए पशु का बिछावन की मोटाई (4-6 इंच), खिड़कियों पर बोरी व टाट के पर्दे आदि पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जिससे पशुओं पर शीत लहर का सीधे प्रकोप न पड़ सके। साथ में ध्यान रखे की पशुशाला को पूरी तरह बंद ना करे, ताकि पशुओं के गोबर द्वारा अमोनिया गैस पशुशाला से निकल सके। इसके अलावा धूप निकलने पर पशुओं को बाहर बांधे और दिन गर्म होने पर नहलाकर सरसों के तेल की मालिश करें जिससे पशुओं को खुश्की आदि से बचाया जा सकता है। सर्दी में पशुओं को सुबह नौ बजे से पहले और शाम को पांच बजे के बाद पशुशाला से बाहर न निकालें। दिन में दो बार पशुओं का बाड़ा साफ़ करे ताकि वहां गोबर का ढेर न लगे। इपशुशाला में गोबर और मूत्र निकास की उचित व्यवस्था करे ताकि जल जमाव न हो पाए।

ठंड के मौसम में बकरी के बच्चों की पालक करें विशेष देखभाल

भोपाल। जागत गांव हमार

जब एक बकरी बच्चा देती है तो वो पशुपालक का मुनाफा होता है। उसी बच्चे को निरोगी रख पाल पोसकर जब बड़ा करेंगे तो वो मुनाफा उतना ही मोटा होता जाएगा। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि बच्चे के जन्म से पहले ही उसका ख्याल रखा जाए और तमाम तरह की बीमारियों समेत मौसम से बचाया जाए।

असल मुनाफा बकरी के बच्चों से - बकरी पालन में असल मुनाफा बकरी के बच्चों से होता है। सालभर जितने बच्चे मिलेंगे उतना ही मोटा मुनाफा होगा। ये बकरी पालन में मुनाफे की बुनियाद भी होते हैं। लेकिन बकरी के बच्चे मुनाफे में तब बदलते हैं जब उनकी मृत्यु दर को कम या फिर पूरी तरह से कंट्रोल किया जाए। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान (सीआईआरजी), मथुरा के साइंटिस्ट की मानें तो मृत्यु दर कम करने की तैयारी बकरी के गर्भधारण से ही शुरू हो जाती है। साथ ही बच्चा पैदा होने के कम से कम 15 दिन तक खास देखभाल करनी होती है।

सर्दी के मौसम में देखभाल- बकरी के बाड़े में भी खास तैयारी करनी होती है। बच्चे के खानपान का भी ख्याल रखना होता है। ये सब करने से ही बच्चे में बीमारी से लडने की ताकत पैदा होती है। अगर इस सब का पालन किया तो फिर सर्दी के मौसम में बच्चे ठंड से बार-बार बीमार नहीं पड़ेंगे।

बकरी का गर्भकाल पांच महीने का

सीआईआरजी के साइंटिस्ट डॉ. गोपाल दास ने किसान तक को बताया कि बकरी का गर्भकाल पांच महीने का होता है। आखिरी के 45 दिन बकरी के खानपान में हरा चारा, सूखा चारा और दाना शामिल होना चाहिए। इसका फायदा बकरी के होने वाले बच्चे को भी मिलेगा। बच्चे हैल्थी होंगे। बीमारी से लड़ सकेंगे। बकरी दूध भी ज्यादा देगी। इससे बच्चों को भी भरपूर दूध पीने को मिलेगा। बच्चा देने के तीन-चार दिन तक बकरी जो कोलस्ट्रम यानि खीज वाला दूध देती है। इस दूध में चार गुना तक प्रोटीन होता है। साथ ही एक खास इम्यूनोग्लोबीलिन प्रोटीन भी होता है, जो बच्चों को बीमारी से लड़ने की ताकत देता है।

जन्म के पांच-छह दिन बच्चे को झुंड से अलग रखें

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बकरी बच्चा देने के बाद उसे अपना दूध नहीं पिलाती है। ऐसे में बच्चे को उस दूसरी बकरी का दूध भी पिलाया जा सकता है जिसने उसी के आसपास बच्चा दिया हो। जन्म के करीब पांच-छह दिन तक बकरी और बच्चे को दूसरी बकरियों के झुंड से अलग अकेले में रखें। इससे होगा ये कि बकरी अपने बच्चे को ठीक तरह से पहचान लेगी। बच्चे को पहले 15 दिन सिर्फ बकरी के दूध पर ही रखें। बच्चे मिट्टी ना खाएं इसके लिए उनके आसपास हमेशा लाहौरी (सैंधा) नमक की डेली रखें।

निमोनिया बच्चों की जान ले सकता है

साइंटिस्ट डॉ. गोपाल दास ने बताया कि सर्दी के मौसम में दो महीने तक के बच्चों की खास देखभाल बहुत जरूरी हो जाती है। क्योंकि ठंड के मौसम में बच्चों को निमोनिया जकड़ लेता है। निमोनिया इतना खतरनाक हो जाता है कि बच्चों की जान तक ले लेता है। इसलिए बच्चों को ठंड से बचाना बहुत जरूरी हो जाता है। इसलिए ठंड का मौसम शुरू होते ही बच्चों को ठंडी हवा से बचाएं। शेड को तिरपाल या जूट की बोरी से चारों तरफ से ढक दें।

15 दिन के बाद बच्चों को दाना खिलाना शुरू कर दें

जमीन पर भी सूखी घास बिछा दें। समय-समय पर घास को बदलते रहें, क्यों कि बच्चों के यूरिन से घास गीली हो जाती है। शेड में डेली वाले चूने का छिड़काव करें। चूना गर्मी पैदा करता है। साथ ही चूना छिड़कने से शेड में कीटाणु भी मर जाते हैं। 15 दिन के बाद बच्चों को दाना खिलाना शुरू कर दें।

पानी का स्तर क्षमता के 70 प्रतिशत से नीचे, पिछले 10 साल के औसत से भी कम

देश के 150 जलाशयों में जल भंडारण की स्थिति गंभीर, प्रभावित होगी रबी फसल!

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

भारत के 150 प्रमुख जलाशयों में पानी का स्तर क्षमता के 70 प्रतिशत से नीचे चला गया है, जबकि 14 राज्यों में भंडारण इस सप्ताह सामान्य स्तर से नीचे हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्रीय जल आयोग के लाइव स्टोरेज पर साप्ताहिक बुलेटिन के अनुसार, 9 नवंबर तक प्रमुख जलाशयों में भंडारण 124.124 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) या 178.784 बीसीएम की लाइव क्षमता का 69 प्रतिशत था। यह स्तर पिछले साल के साथ-साथ पिछले 10 साल के औसत से भी कम है। पिछले सप्ताह भंडारण क्षमता का 71 फीसदी था। अगस्त में -32 प्रतिशत कम बारिश और मांनसून के बाद कम भंडारण स्तर में गिरावट का कारण है। मौसम विभाग के अनुसार, जिन 712 जिलों से डेटा प्राप्त हुआ है, उनमें से 64 फीसदी में बारिश नहीं हुई है या कम हुई है। वहीं, मांनसून के बाद कम बारिश और जलाशयों में पानी का स्तर घटने से रबी फसलों, खासकर गेहूं, चावल, सरसों और चना के उत्पादन पर असर पड़ सकता है।

जलाशय का भंडारण स्तर

उत्तरी क्षेत्र में इस सप्ताह भंडारण में तेजी से गिरावट आई है। यह पिछले सप्ताह के 79 प्रतिशत के मुकाबले गिरकर 14.909 बीसीएम या क्षमता का 76 प्रतिशत रह गया. क्षेत्र के 10 जलाशयों में से कोई भी भरा नहीं है, लेकिन उत्साहजनक संकेत यह है कि किसी भी जलाशय का भंडारण स्तर 50 प्रतिशत से नीचे नहीं है। जबकि पूर्वी क्षेत्र के 23 जलाशयों में जल स्तर घटकर 14 1754 बीसीएम या क्षमता का 72 प्रतिशत हो गया, जो पिछले सप्ताह 73.82 प्रतिशत था। जहां एक में भंडारण सामान्य से 40 फीसदी से कम है, वहीं तीन अन्य में 50 फीसदी से कम है। इसके अलावा, 49 जलाशयों वाले पश्चिमी क्षेत्र में भंडारण 31.719 बीसीएम या क्षमता का 85 प्रतिशत था, जो पिछले सप्ताह की तुलना में एक प्रतिशत कम है। 33 जलाशयों में स्तर 80 प्रतिशत से ऊपर था और उनमें से चार क्षमता से भरे हुए थे। मध्य क्षेत्र के 26 जलाशयों में भंडारण घटकर 39.182 बीसीएम या क्षमता का 81 प्रतिशत रह गया। पिछले सप्ताह यह स्तर 82.18 फीसदी था। 11 का स्तर सामान्य से 40 फीसदी कम है, जबकि चार पानी से लबालब भरे हुए हैं।

गुजरात राज्य, एक अपवाद

आंकड़ों से पता चला है कि जिन 14 राज्यों में जल स्तर सामान्य से नीचे है उनमें आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश में भंडारण चिंता का विषय है। गुजरात एक ऐसा राज्य है जिसके पास पर्याप्त पानी है और भंडारण स्तर सामान्य से 31 प्रतिशत अधिक है। साथ ही, देश में 15 जलाशयों का स्तर सामान्य भंडारण के 50 प्रतिशत तक है, जबकि 105 में सामान्य भंडारण का 80 प्रतिशत या उससे अधिक है। दक्षिणी क्षेत्र में जल स्तर पिछले सप्ताह की तरह सामान्य से 45 प्रतिशत से नीचे 44 प्रतिशत पर बना हुआ है। क्षेत्र के 42 जलाशयों में से 12 में स्तर सामान्य भंडारण के 40 प्रतिशत से नीचे है, जबकि 8 क्षेत्रों में यह 40 प्रतिशत से 50 प्रतिशत के बीच है।

वीरेंद्र जैन सुदर्शन सम्मान से सम्मानित

इंदौर। राष्ट्रीय गोधन महासंघ द्वारा गौवंश पर आधारित अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य एवं रोजगार पर दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में वीरेन्द्र कुमार जैन, इंदौर को केंद्रीय पशुपालन एवं डेयरी मंत्री द्वारा सुदर्शन सम्मान से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप गाय की मूर्ति एवं सम्मान पत्र भेंट किया गया। जैन को यह सम्मान देश विदेश में पंचगव्य चिकित्सा को स्थापित कर 14 लाख मरीजों का उपचार का विश्व रिकॉर्ड बनाने एवं देश की गौशालाओं के स्वावलंबन के चलाए जा रहे अभियान के लिए दिया गया। इस मौके पर श्री जैन द्वारा पशुपालन एवं डेयरी मंत्री को देश की 19 हजार गौशालाओं के लिए पंचगव्य थेरेपी की दवाइयां और पारंपरिक प्राकृतिक खेती के लिए पंचगव्य आधारित आदान की ट्रेनिंग हेतु प्रस्ताव भी दिया गया। इसके साथ ही बेरोजगारों को ट्रेनिंग देकर रोजगार देने, आरएमपी डॉक्टर , आयुर्वेद डॉक्टर एवं बीएएमएस स्टूडेंट्स को पंचगव्य थेरेपी की ऑनलाइन ट्रेनिंग देने का भी प्रस्ताव दिया गया।

आठ करोड़ किसानों को होगा फायदा

15 नवंबर को जारी होगी किसान सम्मान निधि की 15वीं किस्त

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

देश के किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना चला रही है। इस योजना के तहत किसान भाइयों को प्रति वर्ष छह हजार रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। जिसका पैसा सीधे किसानों के बैंक खातों में डायरेक्ट बैंक ट्रांसफर के माध्यम से भेजा जाता है। ये पैसा पूर वर्ष तीन किस्तों में किसानों को मिलता है। अब तक योजना की 14 किस्तें जारी हो चुकी हैं। वहीं, किसानों को अब 15वीं किस्त का इंतजार है और उनका ये इंतजार जल्द खत्म होने वाला है, क्योंकि 15वीं किस्त की तारीख का ऐलान हो गया है।

किसानों को मिलेगा लाभ

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 नवंबर को इस योजना की 15वीं किस्त जारी करेंगे। जिसके लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जहां पीएम मोदी किसानों से संवाद भी करेंगे। योजना के तहत कुल 8 करोड़ किसानों के खाते में 2 हजार रुपए की तीसरी किस्त जारी की जाएगी। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और पीएम किसान सम्मान निधि योजना के आधिकारिक ट्विटर हैंडल के जरिए इस बात की जानकारी दी गई है। मंत्रालय द्वारा शेयर की गई जानकारी के अनुसार, 15 नवंबर को दोपहर तीन बजे इस योजना के लिए कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जहां प्रधामंत्री मोदी योजना की 15वीं किस्त जारी करेंगे। इस कार्यक्रम को ऑनलाइन भी देख सकते हैं।

हेल्पलाइन नंबर पर कर सकते हैं संपर्क

बता दें कि इस योजना का लाभ केवल उन्हीं किसानों को मिलेगा जिन्होंने ई केवाईसी की प्रक्रिया पूरी की है। इसके अलावा, फॉर्म में भरी सारी डिटेल्स भी सही होनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो किसान भाइयों को दिक्कत पेश आ सकती है। ऐसे में अपना फॉर्म एक बार फिर ध्यान से पढ़ें और चेक कर लें। अगर पत्र में नाम, पता, बैंक खाता संख्या, मोबाइल नंबर आदि से जुड़ी कोई भी जानकारी गलत है तो आप इस योजना का लाभ लेने से वंचित रह सकते हैं। ऐसे में अपने फॉर्म को एक बार फिर चेक कर लें। वहीं, योजना से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए आप हेल्पलाइन नंबर 155261, 1800115526 या 011-23381092 पर संर्क कर सकते हैं।

गौवंश बना ट्रैक्टर, बैलों की जगह होती है पूजा

श्योपुर। जागत गांव हमार

पांच दिवसीय दीपोत्सव में लक्ष्मी पूजन के साथ गोवंश पूजा का भी महत्व है। इसीलिए लक्ष्मी पूजन से पहले गाय पूजी जाती है। दीपावली के अगले दिन गोवंश के नाते बैलों का पूजन होता है, लेकिन आधुनिक युग में सदियों पुरानी यह परंपरा विलुप्त हो रही है। खेतों में बैलों की जगह ट्रैक्टरों ने ले ली है, इसीलिए अब बैलों की जगह ट्रैक्टर पूजे जा रहे हैं। श्योपुर क्षेत्र में तकरीबन 1500 किसान गोवर्धन पूजा के दिन ट्रैक्टरों की पूजा करते हैं।

गोवर्धन पूजा के दिन गौवंश मानकर ट्रैक्टर पूजा की नई परंपरा श्योपुर, बड़ौदा व कराहल में पिछले दस सालों से चल रही है। यहां के किसानों का मानना है कि अब बैलों की जगह ट्रैक्टर ही हमें अनाज दे रहे और हमारा भंडार भर रहे हैं, इसलिए उनकी पूजा से ही धन-धान्य में वृद्धि होगी। इसी मान्यता के आधार पर लगभग डेढ़ हजार किसान इस दिन विधि-विधा न से ट्रैक्टर की पूजा करते हैं। बड़ौदा में सर्वाधिक 800, श्योपुर में 400 और कराहल में 300 किसान यह पूजा करते हैं। गोवर्धन पूजा के लिए बैलों को अलग-अलग तरीके से सजाया जाता था। गोवर्धन (भगवान कृष्ण की प्रतिमा) भी गाय के गोबर से बनाए जाते थे।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)